

नानि। सौख्यं कुलकुलवन्ध्या
नानि। मतेन समजायी काको कीर्तिः कुल
यान्नासिताया किं किं सुखं सकलजननिकीयतेन
सा कौक यो गीतयिते ननु ते वित्तमालं वित्तमी ॥
यथादोग्रथमावुधरघये ॥ वपनवपनमा

श्री लज्जित्वा यति धर्मः साहाय्य द्वाव धर्मः ॥ १ ॥

[illegible]

नृति कायः।४

यत्तु म२

भय

कृताह्वीनिखवर्ण्यस्यमयः॥

मग्न.मंका. धामवधुमहात्मा॥ अभयलक्ष्म्यवर्तयन्
यामिषसा नूगानिषया उच्चिना वृष्टिरिमांश्च यत्नं लीगानि यत्नं
पवन्ति सिद्धाः॥ यद्यं दुष्प्राप्तं निष्कृतं यत्नि न दृष्ट्वा पितृ न दिवा
नां विन्दति मार्गं न खल्वभ्युक्तेर्मकारु लोके कः सिद्धिं किं वा न॥ न्यः
लाक्ष्म्या धुवभनयत्तु रूक्षं त्ववः कृष्णं विन्दुः शनाः॥ यत्किं विधा
धनसूक्तं नीलमनं कलखक्रिययापयागं यः पूजयत्तु न कवच
हामन् दत्री मूलात्कनसमीपं लना उक्ता यत्किं विधिः॥ नां

काभापयूकायालखः तत्तन्वधिः याकिता

वायूना१

प्रमाण सं.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

त्वमवैश्वयस्य सार्धं विजिधत्र तत्कमधशेषं जापतिः कल्पितं शक्रहर्गं
 जेलाधिपत्यं स्वयमन्वतिष्ठत् ॥ समानसंभूतसखः पितृणां कन्याकूः
 लस्यस्त्रितयस्त्रिनिः ॥ मनामूनीनामपिमाननीया मात्मानूच्यविधि
 नापयमः ॥ कालकमलं धनयाः पवृत्तं स्वयंपथाग्निसूत्रतपसः ॥ म
 नात्रमयोवनमूददृष्टा गुरुहवहूधनराजपत्न्याः ॥ अस्मत्तानागव
 धूपहाग्धं मेनाकमभ्यानिधिवद्दसख्यं ॥ कुडपिपकृच्छिदिदृष्टं गणववः
 दनाकूकलिगकूगानां ॥ अथपमाननपितुः प्रयूक्तं ददस्यकन्याहव

पुनिता१

पेना ३

गोपालशास्त्रीयसमुद्र

प्रकाशदिकु

उत्पादितो २ कृत्तनिमित्तो १ मना १
पादो ३

वायू३

पूर्वपत्नी। सतीतीयागविष्टदहनां जन्मनाहं लवभूयधदा॥ सा ह्यध
नात्ममधिपनं तस्यां समाधिमस्यामूदपादिरुक्ता। सम्यक्कथागमदैयवि
रुगायां नीताविवात्साहयु। एतन्सम्पत्॥ प्रसन्नदिक्पांशुविविकवातं
हंखलनानक्तप्रयुष्यवृष्टि। शरीत्रिभिरुवावजं गमानां सुखायनरुन्म
दिनंवरुवा॥ तथादूरिणसूतवांसविण। सूत्रस्यराममुलयावकासवि
दूत्ररुमिर्नवमघशयादूरिन्नयात्रलक्षणलाकथंवा॥ दिनदिनसायः
निवर्द्धमाना लब्धादयावान्मुमसावलखा। यूयाषलावल्लमयात्रिषा

मना ३ वर्त्ता कृ ०० व २ सो दशमा या न १
कला १

वैदुष्यतत्त्व
पार्वती २.

अथ नवान्न २
यत्तु का को मदी आत्मा नृप म न ४१

मनाया २

कलना १

नृ. आत्मा नृ. ना जीव कला नृ. नाति ॥ नां पार्वती त्याहि जनन नामा वन्धुपि
यां वन्धुजना रुहा वा उ मति मा ज्ञात य स निषिद्धा यन्धुदू सारणां सुमुखी
जगम म. महीरु न ४ पूज वता पि दृष्टि सुस्मिन्न य ह न जगम मरु फी मूनः
नृपूष्य म. धा हि चू न द्वि न रु माला स वि. णिष सं गभा ॥ पुरा मरु त्या निष
यं व दी प. सि मार्ग य व त्रि दि व स्य मा र्ज ४ सं स्का न व स्य व गि ना म नी षी न
या स पू न स्य वि रुषि न स्या ॥ म न्या कि नी से क न व दि का हि ४ सा कं दू के क
पि म पू ज के स्या न म मू क र्म ध ग ना स र्वा नां की ज सं व नि वि ण नी व वाः

४

कलया ३

गंगया ३

यत्तु का न व दि का हि नि स र्थ २
मनु य ना न सा लो हो स रु का ना ति हो न स्य स म नः ४
आ हा न २

पार्वती १

सूना ३

कानन ३

अरुणा २

त्या नां हं स माला स न दी व र्ग गं म. महो ष धी नृ क मि वा स सा स ४ सि नाः
प द ण मू प द ण काल प्रय दि नृ षा क न ज न्म वि षा ४ अ स र्ग न म पु न
म नृ य धू न ना स वा र्थ कं न र्ग म द स्या का म स्य यू ष्य य ति वि क म र्मु वा
त्या त्य नृ सा धू व य ४ प्र य द ॥ उ न्नी ति नृ हू लि क य व वि णं सूर्यां शु रि हि
न मि वा न वि न्दी व रु व न स्या ध्य गु न मु णि हि व यूर् वि रु कं न व यो व न
ना अ स्य नृ नां गु ष्ठ न ख पु रु हि वि क प ना डा ग मि वा मि नृ को अ ज क
उ रु च नृ लो य पि षां सु ला न वि न्द यि य म य व स्या ॥ सा ना उ हं से नि

यथा स्या रु धा ४

पद्म ३

पार्वती ३ कानि ४ वत लो २

य ना नि र्ग स न ज गु मा दि रु न ३

द ग रु न २

ग्रही कुनि इति २

६८ श्री नरुवय ४ क्रियया श्री जितरुजित वि उ भाविला साय १
कि श्री गति पूजा ४१ नमो यक ३

वसंततांश गतवृत्ती लाजि न विरुमषा यनीयत प्रसूयद गल्लुः
वे नोदित्तरु हि नू प्रगिजितानि ॥ वृत्तानुपुर्ण नव वाति दीर्घ ऊर्ध्व
रुष्टि व न सु दीया ॥ ण पाऊ निर्मान विधे विधातु ला वल्ल उ त्या यः
वा स यत्न ॥ ना गनु रु सा स्त वि क र्क गत्वा द कान् ॥ हो त्या क द ती विः
॥ ण पा ॥ ल वृ पि ला क य वि ला हि नू पं ॥ ज ना रु दूर्वा नू प मा न वा च्छा ॥ ८
ता व ता न न्व नू म य ॥ ण रि का वी यु नै स्त न म नि नि ता या ॥ आ वा पि न
य मि नि ॥ ण न य ॥ द न न्य ना नी क म नी य भ क ॥ न स्था ४ यु वि स्तान ता

ल रु या फो
म हा ध व न

य नि ला हा वि भ न ता ३

आ नू पु र्व ण व रु ला का ले ३
पा र्व या १

५

वदित्रं गुह्यमुदया २

२ वासदक्षिणी रुक्मिणी नं उ च त र्क न्धा न क ता ल विल गं म धी क टि द र्प य स्यं

हि नं ध्रु व ना ज न ती न व वा म ना जी नी वी म ति क म्प सि त न त स्य त न्म र व
ला म ध्रु म नै वि वा र्चि ॥ म ॥ ध्रु न सा वै दि वि ल न्म म ध्रु व लि त्र यं वा नू व रु
न वा ला ॥ आ वा ह ना र्थ न व यो व न स्य का म न सा पा न मि व प्र यू क ॥ अ न्ना
न मू लो य य दू त्य ला ॥ ४ ॥ रु न द र्प वा नू ग था पु वृ द्धि ॥ म ॥ ध्रु य था ध्रु म
मू र व स्य त स्य मृ ण ल रु ग न्क न म य ल र्वा ॥ नि ली ष पृ ष्ठा धि क सो कू माः
श्री वा दू न दि या वि ति म वि त र्क ४ ॥ य ना जि न ता पि क नो रु न स्य यो क ८
पा ॥ णे म क न ध्रु न ॥ नि रु सि ना ॥ ण क न व यु वा ल पा ति द र्प वा नू न र्व त

त न स्य ३

नि व रु त १

नू त न प र्ज १

गलाकालाहकताश्रुतिका १

ॐ स्वपादशक्तिनल्लुनियन्निमापलिषयत्रिषपद
द्विषयस्याऽसाऽर

सविह्नविविध नृप

स्वातिष्कयनमोनास्वासिरुद्बिन्दभ
उदा४। अथनवसरुद्भागास्वायन
वासरुद्भा॥

नर्थाः
लेखधुसपन
असादकप्रसन्न

नागागु३ दीकार्ता३ श्रुवपुष्पानिनिश्रुयमानि यस्यारु३
यूष्माकं३ यूष्मद्य३ एकवा३ यगस्यात्वा३ दनाद्य३ युगं३ यूष्मद्य३ दिष्टि३ धनाति३ व३ न३ स३

का नां पुंरावे न वं लं य वं ॥ यूगप यूगवा दूह्य ॥ यो फ ह्य ॥ या अ विक्रमा
धा कि मि मां धू नि मां स्त्री यां न वि हु ति य थ यू ना ॥ हि म क्रि ष्ट य ता वा नि अ
नी षा व मू खानि वं ॥ पुं ण मा द र्चि षा भ न द वं गू र्ध सू ना यू धा व रु ह्य रु
कुं कू लि णं कू णि नां व ल अ न ॥ कि ष्ट य मं वि दू र्वा न ॥ या र्णे पा ण ॥ य
व न स ॥ म लु ल रु न वी र्य स्य रु ति ना दे न्य मा धि न ॥ कू व न स्य म न ॥
ग ल्यं णं स नी व य ना रु वी श्रू प वि द्ध ग दा वा दू र्ण स सा ख वू व दू म ॥
य मा पि वि लि खं दू मि द ॥ पु न स्त मि त त्वि षा कू रू गं सि न्न मा धा पि नि

70

न४
४॥
नि
निर्वोला मनिवल्का

अविद्य
स्वच्छा

मङ्गलकमनत्रात् २
श्रीलाकोदरनक्षत्राविलम्बन ४२
पञ्चम ३
हिनसि ४
द्वितीयसौर्या १

चोक्षतां न लाघवी॥ श्रीमद्वैकथमादित्या॥ प्रतापकिंतिनी न ला॥ वि
 णं न्यस्तान् वायाना॥ प्रकामां ला कदगिन॥ पर्याकलत्वां मन्त्रां वग
 रं गमनमीयता॥ श्रीमत्सामाद्यसंवाध॥ प्रतापगमनादित्या॥ आवर्जित
 य उतां मोति, विलम्बितां निकाटय॥ नूडां समपि मूर्च्छन॥ कनादका न
 नं शिन॥ लब्धप्रतिष्ठा॥ प्रथमं नखलुषं वलारुने॥ अथवादेवि वा
 त्सर्ज॥ कन्यावृहय॥ प्रथमे॥ नकुन वला॥ किमिति॥ प्रार्थयध्वं समा
 गता॥ मयिष्टिद्विदि लानां नक्षायूष्मास्ववक्षिता॥ तंतामव्यानि ला

सुनिताधिका न ४२

५। प्रहिक्षां२

संकोधन ३

युक्तालवाचननकरी

द्रुत कमला कलाहलिना। गुनैः सगु सह सुत दलया मास वृद्धा। सदि
नशरु नभ्य कू दं वव कू ४ गताधिकी वाच स्यति नू वा व दं प्राञ्जलिर्जलः
मासनी। उर्वयदा नू रु गव न्ना मृष्ट न ४ पत्रे ४ पदी प्रष्ट कवि नियुक्ता ला
कथं नर स्यति पुहु ४। लया द रु व वा दी ल्। स्तान कारणा महा सुत्र ४। उ प
पु वा य ला काना धूम क उ नि वा लि त ४। यू न ना व न्त म वा स्य न ना ति न वि
ना त यी दी र्घि का क म ला न्म वा या व स्मा ष ल सा ध न ॥ सर्व हि ४ सर्व दा च
तु स्त क ला हि नि ष व न ॥ ना द रु क व ली ल खा रु न चू ग म ली कृ ती ॥ वा

गानकी वापी रु स व ४। का न् स म न ४। २
कया पुका ४। २

गानक ३

वा ४। ३

को नि य हि ला दि ति ३। १

रु ग ति नू या न क स म रु य सा ध सा न ॥ न वा ति वा यू रु ला ष्वा ता ल वृ
कानि ला धि क ॥ प र्या य स क मू ल्म य पू ष स र रा न त ल वा ४। उ या न पा ल
सा मा न्य मृ त व रु मू वा स न ॥ न ह्या पा य न था ग्धा ति न त्ना ति स त्रि ता म्प
ति ४। क थ म य मू सा स न्ना ना ति षा रु ४ पु ती कृ त ॥ त रु ना नू य हा प द्वाः
त म्मू रु रु त हा त्रि ते ४। म नू कू ल य ती ला पि क ल्य रु म वि रु ष (ते ४) ॥ ००ः
तु मा ना ध मा ना पि कि षा ति रु व न ग य न्ना म म्प स ल्प का न ल ना प
का व न दू र्ज न ४। त ना म न व धू रु से ४। स द या लु न प ल्प वा ४। अ रि रुः

२३

दू त वा चि ते ३

पी उ य ति २

स सा द य ति ३

अ पि स हा व न स ग्ना य हा र्ज का स मू व य वि वि ३

१२

हविःकुरु हि सूर्याः नितिवि ४३
वला गृहीतं सुनेली ॥ २०० ॥ जगता विपूर्वा

मृपतिरुत समा ना

॥ दृढपाता नां क्रियन्त न न द्रुमा ॥ वीर्यं स हि स न फ ४ ॥ असां ध
न क्षति ले ॥ वामने ४ सुत्र वंदी नां वा य ॥ क न व विरि ॥ उत्पल म नूः
॥ सानि ॥ कृष्ण नि ह वि नां खने ॥ आ क्री ॥ य च ता फ न ॥ कल्पि ना ख व व म
स ॥ म न्दा कि न्ना ४ य य ४ ॥ १५ ॥ दि ग्म न ल म दा वि तां ॥ रु मा म्हा नू रु स स्या नां
न दा य ॥ ध म सा स्य तां ॥ रु व ना ला क न यो ति ४ ॥ स्वर्गि रि ना नू रु य न ॥ शिः
ली रु न वि मा ना नां ॥ न द पा य रु या ल्प थि ॥ यं क रि ४ स रू न रू यं वि न त ध
धु न य स ॥ ज्ञा न व दा मू र्ध मा यी ॥ पि व ना मा छि न हि न ॥ उ च्चे नू च्चे ४ ध वाः

उत्पलित न ३

नाम २

विर्गज ४

कल्प ४

उक्त म व १

३ खिल म ३

यका तु वि वि त ह वा नि ह म न ४ २

२
हविःकुरु हि सूर्याः नितिवि ४३

नामक २ उयी का ट या ३ नामा विकान ३

॥ रुत रु य न ल म रु मि वा द रु व द मि व न्द स्य वि न का ला र्जि नं य ॥ ११ ॥
न स्मि नू पा या न स र्व ॥ कु न य ति रु न क्रि या ॥ वी र्य व न्ता ॥ ध म्नी व वि का
न सानि पा ति का ॥ ज या सा य गु यो म्मा कं ॥ य ति घा ना ति ना र्जि षा ॥ रु नि व क
न न ना स्य क ॥ १६ ॥ ति क नू वी र्थि न ॥ न दी या र्का य द ध य ॥ पू र्क नी व रू का दि
षू ॥ अ ल स्य ति न ला घा न ॥ नि र्जि नं ना व ना ग जा ॥ न दि द्वा मा वि रू सु रू म
ना न्य न स्य ॥ न य ॥ क र्म व न्ध वि द ध र्म ॥ रु व स्य व मू मू रु व ॥ १७ ॥ फा न
सू न से न्या नां ॥ य पू न स्य ॥ १८ ॥ गृ हि नां य न्ता न य ति न क र्मा व न्दी मि व जः

रुषा ४

मृग रु स १

मध ४

रथा गि न ४

सं व रू म्मा व रू य क

रु उ म्मा न ३

॥ १५ ॥

४ ॥ १५ ॥

रुविद्यति२ पूष्पाकी२
जिनवती२ समाप्तसति१
नरु३ आश्रय४ यावित४
कामस्य२

यद्यियं॥ ववस्यवसितनस्य॥ ससकृन्नित्रमात्मरु॥ गर्जिताननकत्रादिहि॥ सो
रुगलजिगमयसा॥ संपत्तनव॥ कामार्थ॥ काल॥ कथित्यतीकता॥ नन्वस्यः
सिद्धोयास्यामि॥ सग्नयायात्रमात्मना॥ न॥ सदेव॥ पाफधी॥ न॥ न॥ वारु
ति॥ कथं॥ विषवृक्षापिसमर्थ॥ स्वयंकुरुमसांप्रती॥ व॥ न॥ न॥ दम॥ वारुम
या॥ वा॥ से॥ पुनि॥ ग्र॥ व॥ न॥ ल॥ मि॥ तु॥ ला॥ का॥ न॥ ल॥ द॥ म्भ॥ हि॥ न॥ रु॥ प॥ शा॥ स॥ यू॥ ग॥
सा॥ यू॥ गी॥ न॥ क॥ मू॥ य॥ न॥ प॥ स॥ रु॥ न॥ क॥ श्र॥ म्भ॥ द॥ न॥ नि॥ व॥ क॥ स्य॥ नी॥ ल॥ ला॥ हि॥ न॥ व॥
न॥ स॥ शा॥ स॥ हि॥ द॥ व॥ ४॥ प॥ न॥ अ॥ ति॥ रु॥ म॥ ४॥ पा॥ न॥ पु॥ नि॥ छि॥ तं॥ प॥ नि॥ छि॥ न॥ प॥ रा॥ व॥ दि॥

सायूगाभाजनसं
श्रीमद्वैत३
३४२

समर्थ३
श्रीशिवितस्य२

१३

स्वापि३२ अ० व० पि० २
न० २
रुलाकादिना३ शिव० २
नि० य० १
न० क० म० स० वा० नि० वि० क० २
न० म० या० न० व० वि० म० ना० उ० मा० नू० प० ल० न० यू० य० स० य० म० सि० मि० न० म० न० ४॥ न० क० या०
न० ध० म० क० क० म० य० क० न० लो० ह० व० ना० उ० रु० व० द० म० वा० दू० मू० रु० या० वी० ज० मा०
हि० नी० सा० वा० न० क० रु० दी० या० वा० मू० लि० क० ल० म० या० म० ना० न० स्या० त्मा० नि० ति० क० ल० स्य
स० ना० प० ल० मू० प० ल० व० ४॥ भा० क० न० स० न० व० न्दी० ना० व० नी० वी० र्थ० वि० रु० ति० रि० ४॥ न० ति
या० द० ल० वि० दू० ध० न० वि० ल० या० नि० सि० वा० द० धा० म० न० स्या० हि० न० क० रु० या० क० यि० द०
वा० दि० व० य० यू० ४॥ न० पु० नि० वि० ल० क० न्द० र्थ० म० ग० म० त्या० क० सा० स० न० ४॥ म० न० सा० का०
र्य० स० सि० दि० ल० वा० दि० पु० ल० न० रु० सा० अ० थ० स० ल० ति० न० या० र्थि० क० ल० ना० वा० नू० म०

उ० क० ३
श्रीशिवप्रधानादवधनसाधनशून्यकदाचि३
पूष्पाकी४

नि० य० ३
श्रीशिवेजायतयू०
न० न० स०

३ त ५

अं प्रतिवलयपदा क वापमासक क वा सहवत्रमधूरुसुन्य चूना हू
 नासु ४ सनमुखमूपनसु प्राऊलि ४ पूषककु ४ ॥ ३२ ॥ ॥ ॐ ति श्री कृमात्र
 समुवमहाथवकाहिरुवर्मा नानामदितीय ४ सगर्ज ४ ॥ ॥ तस्मिन्मः
 धानसिदधनिहाय सहसमकूयूगपयपाता प्रयाऊनापदिनया
 यरुना पाय धल गेनवमाधितयू सवासवनासनसन्निकृष्टमिना
 निषीदतिविहृष्टमि ४ रु ४ प्रसादप्रतिवैद्यमूर्द्धा वकुमिथं ४ पाकः
 मनेनमक ४ ॥ आरूपयकातविहाययूसा लाकष्यरुकवलयमसि

१४

उपविहृष्ट २ दल २ ॐ नु २ सवकषू ३ वदिग्रहिवाद नलु २ ॥ सनसमीप ३
 ॐ नु १ तव १ अन्त्या २ जालवत् २

अनूपदसं सत्र तप वृद्ध मिहामिस मर्द्धि तु मा रू यात ॥ कनीयसूया
 रु लकादितात निता नदीये र्जनिता न पारि ४ यो वरु वलादिन गय
 कस्य मलाम् कस्य स्य निद ४ वली ॥ अ समन ४ क सुवमूकिमा म्रि पू
 नरु वरु हरया लु पन ४ व दधि नतिष्ठु कामिनीना मा नवि नरुव
 तुनेविता से ४ ॥ अ धापि तस्या सनसापिनीति प्रयूकवा नूपति धर्द्धि वः
 लाकस्यार्थधर्मो वद यी गयामि सि धा सुटा वा घण्व व प्रवृद्ध ४ कामक
 पली वरु दुःखशीला लाल मन ध्य नूतया प्रविष्टा विलमिनी मिहसि

आवापितसत्रस २

उत्पादिता २
 आरुवही ३ अंगुलीकर्तु १

तव १ वक्रा १ अत्यसूयादावाला पाउ (पत्रवि २) सत्र १ ॥ १९

पापितस्यापि ३

अकथन ३ गजा ३

१५

द्वितीया ३
ब्रह्माणां ह्यथाज्ञानादिमत्ताणां ह्यवस्थानस्य

स्वानुदत्तापतिः

उपलब्धकाष्ठयासनाहमिन्नरुसधिका

प्राकाशयन्नुदपायः

हस्त

समस्त

समर्थ

कथितं

हिमालयश्रृंगारः

स्मात्तस्मिन्माहः प्रयत्नान्नृजं यत्तात्पर्यं यत्तत्त्वाविस्तृतं
 तदीयं निषकस्मिन् सर्वं मन्त्रं तस्मात्तु पदिसु ॥ पुनर्निर्वाणं नरग
 नुकन्याः स्तनून् पश्यन्मधिलंकायां श्रुत्वा हृत्स्वस्रसां मुखस्य ॥ ध
 नं मयामत्यन्तिधिः सर्वग्नः तस्मिन् च सिद्धौ कृत्स्नवकार्यं मर्थयमर्थक
 त्रलयं प्रवाश्रुपदं नृपयमूलं मन्त्रं वीजां कृत्स्नं यागुद्ययादिवा ॥ ३४ ॥
 ॥ अस्मिन्नालं विजयाय पार्थ तवैव नामांशुगतिः कृतीत्वा श्रुयं प्रसि
 द्दयं सहिषंसा मनन्या साधनं मवकर्म ॥ सूत्राः समर्थयिता नृप

१३

मदीयान् नृपयनः ॥ १४ ॥
 कोनर्गः

अधितिष्ठति

हिमकुसुमः

यावयिता नृपः ॥ १५ ॥

जा

विह्वलं वनं जगत्

दिनश्रुतिस्तुतिः ॥ ३ ॥

आव्यर्थः

तत्कार्यं यथा तमपि विदुषां नृपयन्ते कर्म नृजाति हि सुमहायः
 अस्मिन्नुद्योगे वीर्यं मधुस्थं मन्त्रं सारुवर्णा दसा वनकाधिपसह
 यं वा समीपं प्रविशन्ति यादिधनं कनकं तासनया ॥ नृप
 ति माला मिवरुर्लक्ष्मी मांदाय मूर्द्धा मदनः प्रतस्तु ॥ दिग्ध्वजस्तुलन
 कर्कशं नृपयन्तं ददन्मिन्नुद्योगे समाध्वनो हि मन्तनसख्या न
 र्वाचसां कर्म नृपयन्तः ॥ स्वाध्वययार्थित कर्मसिद्धिः ॥ ३५ ॥ महे
 मवर्तं जगत् ॥ तस्मिन् नृपयन्ति मनीनां नृपः ॥ समाध्वयं प्रतिकूलं

हस्त

रुविदल्लकनसयल्लमनशर

रुवयाहानो गन्धवाहानिना ४ दिग ४२
कववगननिकाभागावममादि ४६ विवगि वि ४१

कामस्य १
बलीकलविपन १३ लमनशर ३

वदतसा १ कववगननिकाभागावममादि ४६ विवगि वि ४१

वली॥ संकल्यो नत्रहिमानरुत मात्मानमाधयमधुर्जितम् ॥ कूवत्र
यफादिगमूत्रांशो गनुं पुवुरु समयविलंघ्यादि ग्यदि ल गन्धं वरु
मुखन यं लीकनिष् स मिवांस्त स ऊ ॥ अस्तु न स य ४ कू सु मान्य १६ क ४
रुं भं सु र व स प लु वानि पा द न ना ये द न सु न्य नी लं स म्य क मा सि जि
न नू य र ला स र य ४ पु व ला रु म वा नू प र ला र स मा कि न व च न वाना नि व
न या मा स म ध र्जि व र ला ना मा द न ला व म ना रु व र य ॥ व र्ण पु क र्ष स नि क
र्त्तिका न दू ना नि नि र्ज न्ध न या स म य न ४ या य ल सां म ग्धु वि धो गु ल ना

१०

स्वभतत्रुका लुस्यादि ति ध व ति ४४
दृग् उपगा

पुंसा लो रु न य न ३
सं मि व र्ण ४
पी न ल स ति २
सं पू र्ण ता क न १

विहग ३

तिलकपूयमवतिल ३ वरुवर्त्तन ३
हौ दि को १

पत्राक्षुखा विष्व रु ४ पु र हि ४ ॥ बाल न्दू व क्को ल्धं वि का गि रु वा द रु ४ प
ला भ न्दू गि ला हि ना नि स आ व स क न स मा ग ना ना न ख द ना ना व व न
सु ली ना ल ग्धु दि न रु र न रु कि वि ण् मुख म ध र्ण र्त्तिल कं पु का धा वा
ग न वा ला नू ल का म ल न चू न पु वा लो षु म ल व का न ॥ मृ ग ४ पि या लः
ऊ म म ऊ र ली लं व रु ४ क ले वि धि न द र्ष्टि पा ना ४ म दा द ना ४ पु ल नि लः
वि व न् व न सु ली र्म र्म य ण मा द्वा ४ चू ना दू न्खा द क षा य क ल ४ प
स्वा कि ला य न्म धू र्ण वू ऊ म न सि नी मा न वि धा न द द्द न द व जा र्ग

रुलो लो हि मा णि षू र्ति वि ष्य २

मर्मनसुष पडस्यादियमनशर
ली

कषायो न स रु द स्या

श्रीपूसा मिथुना दन्द

अतिक्रान्तिः

^{तदाज्ञातः}
^{यकाष्ठकृत्यनादधर्मसमः॥}
^{ग्रहनेकाननवनः}
^{अप्रतिष्ठितः}
^{विवक्षया}
^{दृष्टिप्रकाशः}
 मपुं काष्ठार्थि न हे म द धुः॥ मूर्खार्थि ने का गुलि स रू ये व मा वा प ला य
 नि ग लान्ता ध धा ता॥ निष्क म्य वृ क निरु न दि न ह म् का लु र्ग म क म ग
 पु वा नी त द्वा स ना का न न भ व स र्व वि शार्थि ना न रु मि वा व न स्का॥ द
 द्वि य दी प य वि द ह य न स्य का म ४ पू न ४ शु क मि व पु या ॥ प्रो क्त पू र्ण स
 क न भ नू श ख ध्वा ना स्य द रू ग य न चि व ॥ स फ रि ४ कू ल क ॥ स द व
 दा नू द्र म व दि का या का द न व र्म य व ध न व र्णा आ सी न मा स न न ॥
 नी न पा न र्ण व क स य मि न द द ॥ प र्थ क व ध हि न पु र्व का य म्
 ४ पु ति शु क पु ति वृ द्ध य स ग न क म व
 नि क ट २

ना ज द्वा त म्पा ति व र्ण ३
 अ पि न क स मा २

^{तानकाकेकवर्णानिकल्पमनः॥}
^{विगतः}
^{वेत्त}
^{निव्यतिकृतपक्षसमूहः॥}
^{नृजाकमालाः}
 का य गं र न मि ता र्था सी उ क्त न या ति द य स नि व ॥ सु रू न्ना जी व
 मि वा क म ध्वा ॥ तु र्ग म मा व द्ध उ टा क ला य क र्ण व स क दि ट ल क स र्व
 ॥ क ल पु र्ण स ग वि ॥ घ नो ला मृ ग ल व य नि म ता द धा नी ॥ कि वि लु का
 ग रि मि ता य ता नै र्क वि क्रि या या वि न न पु र्ण ॥ न न वि स्य नि ग य
 म्मा ले र्क की क न द्वा ग म धा म पु र्वे ॥ अ वृ द्धि स न रु मि वा म्वा रुः
 म पा मि वा धा न म नू र न म् अ क र्ण वा ध म नू ता नि वा धा नि र्वा त नि क
 म्म मि व पु दी प ॥ ल ला ट न श क न ल द्र मा र्ज ॥ अ ति ४ पु वा द वृ दि ने ४ः
 वि धे द न यान ३
 अ न न नि ग द ता का ३

अविनाशिनं ३

पञ्चकं ३

शिवरु० मृ० लसु० ग्राधिक सो कूमायां वालस्य लक्ष्मीं सपयन्मिन्द्या
 ॥ ४३ ॥ आदिकूलकं ॥ ३ ॥ ॥ मना न वदात्र विविद्ध वृत्तिं ददिय वसु
 यं समाधिवर्धय मन्त्रं वक्त्रविद्याविदूरे आत्मानमात्मनो वला कयं
 गं ॥ समरु० धरु० मयू० मन्त्रं पञ्चनैदुनात्मनसाथं धृष्टं नालकः
 यत्साधस सन्नरु० अरु० मन्त्रं वापमपि स्रुत्वात् ॥ यं वरि कूलकं ॥
 निर्वो० धरु० यिष्ठमथस्य वीर्यं सन्धु० यत्की ववपू० नु० धना० मू० ययाता
 वनयवगाथां मृ० दधनसु वववाज कथा ॥ मू० शकनि र्हर्ति नयप्रवा

२०

महृपायं २

कामस्य २

पूतनजीवयन्ती २

कुंगमक ३

सखीरूतायां १

लंविर्गा ४ पञ्चलितम्बुकी कथा २ पूतनजीवयन्ती २

पनिदधना २

ग० मा० क० पू० म० यू० नि० क० कि० का० न० मू० का० क० ला० पी० क० न० सि० नू० वा० न० व० स० न०
 पू० षा० रु० न० व० रु० की० ॥ आ० व० र्जि० गा० कि० वि० दि० व० रु० ना० र्थां वा० सा० व० सा० ना० न० नू०
 ध० र्क० ना० गी० सं० ज्ञा० न० पू० षा० रु० व० का० व० न० म० सं० वा० त्रि० णी० य० ल० वि० नी० ल० र्ता० वा०
 अ० र्का० नि० ग० म० द० य० ना० प० य० की० पू० न० ४ पू० न० ४ क० ण० न० पू० षा० का० थ० ना० र्थां र्का०
 ता० र्का० न० वि० दा० म० न० व० दि० नी० य० मो० र्वा० मि० व० का० म्म० क० र्थां ॥ सु० ग० नि० नि० ४ ध० र्क०
 वि० रु० रु० रु० वि० म्बा० ध० ना० स० न० न० व० दि० न० र्हा० य० नि० क० र्ण० रु० हि० त० ल० ल० दः
 दि० ली० ला० न० वि० न्द० न० नि० वा० न० य० की० ॥ ४७ ॥ कूलकं ॥ ४ ॥ ना० वी० अ० र्वा० व०

रुक्मनधनयन्ती ४ मोर्विषासिञ्जनागुणः पूतनः ३

कविता

यवानवैशा, वनवैपिकीमतिमादधाना॥ किमन्वियंश्रुतिनिपूषक
 उ४, स्वकर्मसिद्धिपूनवांशसंसा॥ रुविषयत४ यत्पूमावशांश४ संः
 माससादयतिहावैरुमि। यागमहावांश४ यत्रमात्मसंरू, दृष्टवित्र
 अतिनूपावनामा॥ ननाहुजंमधियन४ रुलाये, नध४ कथकिरु
 नरुमिहागी। शने४ कनयाशविमूकिनी४, पर्यकवन्धनिविठः
 विरुद॥ नसे४ शं सप्रतिपत्यनन्दी, सुशूषया। होलसुनामूयनी।
 पुवशयामासवैरुहू, कृकेपमाशान्मिगपुवशी॥ तस्या४ सखी

२१

धीनतत्याज ४ जेनी १

यागपदा ३

श्रुगती २

पञ्चात् १ महादवह्ना १

स्याप्रतिपत्यसूज्ञ, स्वहसुलून४ शिनिनाययस्या। यकार्यतशमकपा
 दसूल, पूषात्रय४ पल्लवरुहंरिन्न४। उमापिलालकम, धुमहिः
 विष्टस्यन्तीनवकर्त्तिकात्री। वकात्रकर्मचूतपल्लवन, सूज्ञप्रलमंरु
 षरुधजाया॥ मूननारुजंयतिमापूहीति, साहयमवाहिहिताहवतान
 होष्यनयादहय४ कदावि, त्युक्तिलाकविपत्रीतमर्थी॥ कामसुवात्त
 वसत्रपतीश्र, यतीगवधकिमूरुविविदु४। उमासमर्दहववदलक
 ४, शनासनश्रीमूद्रावांसमशी॥ ३४॥ श्रुथयनिन्यगिनिशय। गेनीत

श्रुत्यानरुकुतीत्यनन्यरुका ४

४रुयंत। धुहंया। ध, रुविषयवि कीर्तिता

महापूषाकय ४३

नवाधयति ३

संमर्षितवती १

गलरु २ श्रुकर्षयामास १

२२

मुखनिर्यक्तः

संयमित्वात् १

वैगन ५

मन्त्रोपवनामन्त्रोत्पन्नः ॥२॥

वनस्पतिर्वृक्षमात्रं विनापुष्पं हनिष्यति विष्णुश्च ॥ अथ मन्त्रतथा का (१) विष्णुः

मन्त्रः १

वृक्षं हनति कल २ रु ३

दि

रुहं वा सनामूकं रुहं नापकात्रं वृत्तिर्वहवा ॥ तमांशुं वा प्रतयसः
सुपस्वा वनस्पतिं वृक्षमिव वदन् ॥ सुसन्निकर्षं पत्रिहर्तुमिच्छन्
नर्दन् ॥ धृष्टतपतिः सहनः ॥ लोलात्मजायि विदुः वृक्षं त्रसो हिलायं यथ
समर्थं ललितं वपुः शोभनं ॥ सखाः समं कर्मिणि वाधिकं ज्ञातलं ॥
शून्याः शुभमरु वनारि मूर्खा कथञ्चित् ॥ स यदि मूकलिता दी नूतनं
रुहीणा दूहिता नमनूकम्यामं दिवा दाय दार्या ॥ सुत्रगजं वृक्षं वृक्षं
भिनीदन्त लम्पं ॥ प्रतिपथगतिं त्रासी वृक्षं दीर्घा कृता ॥ १३ ॥ ॥

२३

निष्पिष्टः ४

दवयो नो गालं हनन्ति विष्णुश्च ॥

मंदं मंदं ४

त्रयं

दि २

काधनं ३

ददता ३

ननु या १४ सा वक्ष्यते ३

अलया ३ ननु वृक्षं

॥ वृत्तिं श्री कृमात्रं सहं वमहा काथा कामदहना नाम हनीय स रुनिः ॥
॥ ॥ अथ भारुपनाय सती विवक्षितं कामवधुर्विधा विनायुति
पादयिषता नववेधमसक वदनी ॥ अवेधानयत्र वकात्रसा पलयाः
कामिषि न विलायता न विवदतथा न दृष्टुयाः ॥ प्रियमं एतन्निमग्नद
र्शनं ॥ अयि जीवितनाथ जी वसी एहि भयोक्ति तया नया पूजः ॥ ददता
पूजषा कृति किं नो रुत्र काया नल रुसक वली ॥ अथ सा पूनत्र ववि कः
ला वसुधालि गनधूसत्र रुनी ॥ विललापविकीर्णमूर्धजा समदृष्टा

सुप्रसन्नः ३

एथा २

विलापं वकात्रं १

^{द२} ^{पुनरुज्जाय१} ^{नवीन१} ^{मम४} ^{प्रिय१} ^{दुःख२}
 मित्रं कर्तुं नीक्षणी॥ उपमानमरुदितं सितां कर्तुं यत्नं वक्तुं मरु
 या॥ तदिदं गतमीदृशं हृष्टं न विदीर्य कठिनां स्वल्पं प्रियं॥ कर्तुं मा
 त्वदधीनजीवितां विनिकीर्य कृष्णहिमसो दद॥ नलिनीं कृतं स्रुवन्ध
 नां कुलसंघातं वासि विदुः॥ कृतवानसि विप्रियं नमं प्रतिकूलं न
 वतं मया कृतं किमकात्र समवदर्शनं विलपन्त्येव नयनदीयता॥ स्म
 त्रसि स्म त्रमखला गुह्ये नूतं गम्य स्वलितां वन्धनीं शूतकं वदूषिता
 कृष्णं न्यवर्तसात्यलताति नानिवा॥ हृदयं वससीति मसि यं यदवाच

नव३

श्रुतं उत नृति विनक्तं २

मत्र लसमयं न्यनायिको नाम गृहर्तुः २

२४

^{यानासि१} ^{कपट१} ^{श्रुतपदं नव१} ^{मार्ग२} ^{रूपज्ञव२} ^{विभक्ता२}
 सुदर्वैमिके न वी॥ उपवाचपदं नवदिदं त्वमनङ्गं कथमङ्गनाति
 शापत्रलाकनवप्रवासिनं प्रतिपत्त्यपदवीमहं न वा विधिना कुतः
 प्रवचिन्तं स्तब्धधीनं स्वल्पदहिनां सुखं॥ त्रज्जनातिमित्रावर्तुति प
 त्रमागं च न गच्छ विदुः॥ वसतिं प्रियकामिनीं प्रियां त्वदन्तं प्रापयि
 तुं कळीं श्वत्रं॥ नयनां नयनानि घूर्णयन् वचनानि ह्वलयन् यदप
 दं॥ श्रुतिं त्वयि वा नूनामदं प्रमदानामधूना विलम्बना॥ श्रुतं गम्य
 कथी कर्तुं वपुः प्रियं वत्सलं सुवनिः रुला देयं॥ वदू लयि गतं निसाक

श्रुतला४
मदिलया२

वसती नाति वत्सना त्रि लमत्र१४ वत्सलवति२ विना४
 वदू लकृपदं सविति विव्य११

न० न नूतं दू० स्वमं न गभा कति॥ हविता नूतवा नूतपल्लव० कलपूः
 का किल लघय सुविन० व द संपुति कस्य वा लतां न व नूत यलवा गमि
 याति॥ अलि पंकि न० एक लहया गुल कल्लेध नूतानिया जिता वि नूते
 ० क नूत लहये विनयं गु नूत काम नूत आदि न० व मी॥ प्रति पय म नारु न
 म्पू० पू न न यथा दि लता व दूहि न० न कि दू न य द वू का किल न्म
 धू नालाप नि स र्ग पठि नान॥ मि न सा प्रति प लया विता नूत य गूतानि
 स व य धू नि वा॥ सू न तानि च तानि तानि तं स न स र्ग ल न ल नि न कि

२५

नो वि ति रु लो ४

सकम्पानि

उपा नूत द व न द ल त ० कू स द ति ता न त नू दि द
 तव १ त्वया २

मम १

आ ग ल ४

वि द ल वि वू ध ल न ल म न १ २ कू स न न क न १
 म ३ रु वी १ अलि क ता नि १

म॥ न वि तं न वि प ठि त लया स्वय म र्ग म म द मा र्ग वी प्रिय त कू
 स म प्र सा ध न त व न वा नू व पू र्ण द ल न॥ वि वू धे न सिय ल द नू ले
 न स मा फ प वि क र्म ति स त ० त दि द कू नू द कि ल त न च न ल नि मि
 त न ग म र्हि म॥ अरु म ल य प त स व र्म ना यून न का ल यि ल रू वा मि तं
 । व रु ने ० सू न का मि ना रु ने ० प्रिय या व न्न वि लू प म दि वि॥ म द न न
 वि ना क थ न नि ० क ल मा र्ग किल जी व ती ति मा व व नी य मि द थ व हि
 तं न म ल ल म नू या मि य थ पि॥ प्रिय त क थ म य म लु न प न ला का न

मम ४

य त कू स न रु वा लो मा र्ग न कू ल ल न नू ति ४ रु य के न ३ त व ४

द्वयस्य नां ३

तव २

नृतिप्रतिपादितार्कवा ३

वितस्य न मया। स्वयमवगतास्य तर्कितां गतिमगलवज्जीवितनव
प्रसक्तानयनः स्मनामिह। अत्रमूलादनिषकधन्यनः। मधुनासह
सस्मितां कथां नयनापातविलाकि तक्ष्यन्॥ कनूतददयं गमः ४ स
खा कसमायाजितकाम् कामधूः। नखलूयत्रुषापिनाकिना गमिगः
सापिहृदममोदति॥ अथनेः पविद्विताद्वे ददयदिग्धनेविवा
दिनः। नतिमस्य पयर्हमाहुना मधुना स्नानमयर्गयत्पुत्रः॥ तमव
श्वत्रुनादसाहं। सुनसन्नाधमूनादधानव। सुजनस्यहिदूःखमय

२३

मधुः

प्रसक्तपतिवत्पुत्रस्यमनोविलापवचने ३

विषलिफसत्रे ३

प्रसक्त १

प्रसक्तपतिवत् २

वसक्त २

सक्तस्नानवा १

दृष्टितापात्रउत्सुक ३

वसक्त १

दृष्टितापा १

चंचल ४

ता विवृतदात्रमिवापजायत॥ नृतित्रेनमूवाचविल्लावा सुददः यः
ध्ववसक्तकिस्तिता यदिदं कलं ४ विकीर्यत पवनेरुसकपातकर्तृ
त्रा। अयिसम्यतिदहिदहनं सत्रयर्थत्सुकप्रसमाधवः। दयितास्वन
वस्तिनं नृणां नखलूयमचलं सुदकृता। अमृताननूपाध्ववर्तिना ज
गदाहं ससुनासुनकवा विसतनुगुणस्यध्वनिं धनूषः कामलय
षापतिगः॥ गतवचनं निवर्तनं ससखादीयं वा निलाह नः। अ
हमस्य दं वयधमा मविषयसतप्रधूपिता॥ विधिना कृतमयवे

दीपस्य १

वर्तिनिवा १

मृगालविशमजादीयमेव ४

तव २

प्रसक्तदृष्टितापात्रउत्सुक ३

प्रसक्त १

तदिमोदासिनीविग्रहस्यसप्तः॥४॥

रुवसक्त३

निकर्त३

गर्भं ननु मां कामवधविमुखतां ननु घातिहि संघिताक्रम गजहय
पतनाय बलनी॥ तदिदं क्रियतामननकर्म रुवतावन्धूजनयथाजनं
विधूनां कलनाति सङ्गनां ननु मां यापययत्नं किं॥ गतिना सहया
निकोमूदी सहभयनं तदिदं लीयतां पुनदा ४ पतिवर्त्मगच्छति यति
यत्नं हि विवतनेत्रयि॥ अमूर्ते वकषायितरुनीं सुरुगनयियगमय
रुसना नवयत्नवसंस्तवयथ नवयिष्यामि ननु विरावसो॥ कसुमा
रुनलसहयतां वदुः ४ सोम्यगनस्तु मां वया ४ कूबूसंयतितावदा

२१

लीगुच्छवने ४ नतिकामया १ अमूर्ते २
रुवसक्त १ कषायानसं रुदस्यादंगनागविलपनं नूतिवि ४ ३
अरु २

धृता ३

काष्ठावयनानकर्म १

त्वनिर्गलयं १

गुम पुतिपाता अलियावितां वितां॥ तदं नू कलनं मदर्थिगं त्वत्रय
दं किं एवांगवीजनं ४ विदिगं खलु नयथा सत्र ४ कलमं स्रुतहगन
मां विना॥ नूतिवापिविधयं दायतां सलिलस्या अलित्रकचवमो ४ अरु
रुष्यपत्रयत्नया सहित ४ पात्यतिगत्तवान्धवशा यत्र लाकविधेव
माधव सत्रमूदि धविलालयत्नवा ४ निवये ४ सरुकात्रमअनी ४ यि
यदूतयुसवाहि सखा॥ नूतिदरुविमुकयस्तितां नतिमाकागरुवास
वसती ४ गरुनीं ददामविदलां यथमावृष्टिनिवा नूकं मययतां क

पत्रलाक ४ सकल्पय ३

दास्यति ३

आवयो ३

१ रुपादयान् कपास्यादि सप्त ४

प्रज्ञापतिनः
समोपन नृणां विलम्बमव ४२

तिला रुमाया ३

वज्रितन्त्रियग्रसं० २
श्रुतिप्रवित० ३

सुमायुधपतिदुर्लभस्त्ववर्तुनवित्राहविद्यति॥ १८॥ यनस्वक
 र्मलगतः १८॥ लरुत्वंदत्रलावमात्रिवि॥ अहिलाषमूदीनितद्वियः १९॥
 सुनायामकत्रात्यजायति १९॥ अथनननिगृह्यविक्रिया मरिसफरुतः
 भनदन्वरुत् ॥ यत्रिलष्यतिपार्वनीयदा नयसानत्यवलीकृताह २०॥
 १३॥ यलवसुखरुदास्मन्नवयूषास्वनसमययिष्यति ॥ २०॥ नितिवारुसधः
 र्मवात्रिलास्मन्नसापाकरुवास्त्रस्वती ॥ अहाननमनस्यवारुथावसि
 नस्थामुधनाश्रयानय १॥ नदिदपत्रिबद्धा १८॥ रुनरुवितयपिषस

२८

मूल्य ४१

रुतवाहवन्ति ।

वक्रस्य२

प्राफसूर्यसन४

गूढसंस्कारचक्रान्तः

न ति ३
द्वार्या १

पू. वा. प्र. १५१

विष्णुसंख्येयानामाचार्य
॥०००॥
॥०००॥
॥०००॥
॥०००॥

समं वयं ॥ न विपीतं लानं यात्ययं यूननाद्यनहि पूर्यत न दी ॥ ॐ
न ते ॥ किमपि रूतमदृष्टं नृपं मदीयकात्रमत्र तद्यवसायवृद्धिं न न्य
त्ययाच्च कसुमायूधवन् नमो मांश्च सयद्वह्निर्वर्धय त्रेव वाहि ॥ अ
थ मदनवधून् नृपं वार्त्तं यस्तनुरुष्मयत्रियालया म्बरुव ॥ गतिनं
वदि वातनस्य लखा किं न तपत्रिद्वयधूसनाप्यदायी ॥ ॥ ॐ ति श्रीकृमा
नसकृत्तमहाकाशं नितिविलापानां सचतुर्थः सर्गः ॥ ॥ तथा समकः
न्दरुतामनाहव पिनाकिनाह गमना नथ सती निनिन्दयुपं दययन

अथान्नं ४

पिना की उ स था धि य नू ल स न ४।१

पत्रियात्रनि ५

षण्मनीमुखं ३

यनः यनायः

लक्ष्मि विजय

मूर्द्धन्यजीनग्रहलक्षणं
वत्सुखं १

कुला३

श्रुतवश्यार्थवृत्तां ।

या च त्रीणि विंशत्यस्यैव रागाग्रहं ताहि वाचता ॥ ॐ यथा सा कर्तुं मन्त्रं नूयतां स
माधिमास्तु यथा हि तस्मिन् ॥ ॐ वाचता वाक्यमन्यथा दयं तथा विधं
धर्मपतिं स्थिता दृष्टं ॥ निष्ठां च नाना यस्तु तां यमां सुतां मित्रिणां यति
संकुमानसां ॥ उवाच भनायत्रिलक्ष्यं वदतां निवाचयन्ती महतां मुनि
व्रतात् ॥ मनीषिता मन्त्रं गृह्यदवतां तपः कवत्सं कवता वक्तव्यं
पदं सुरुत उमत्र स्याथ लवं मित्रा ययूषान यूनः यतः शिष्टं ॥ ॐ निधं
वक्ता मन्त्रा सतां सुतां शिष्टं कर्मना ननियन्तु मूयमात् ॥ क० सिताथ

रुद्रप्रतिलग्नविरुद्धमेवां४ कामल२

अलिं ग्य ४ हृदयन ४

रुद्राष्टकम्

त्वदीयं मनीषं

पदि १४२

२६१

निष्ठाया कुर्वन्निविध्यः

ला.क.पू.४

नियमाय ३

ख्यातं ४

अनूनूपय

अथ तन्त्रयाः हि

नेव ११५५

स्थितिनिश्चयं मनः ॥ ययस्थितिमाहिमुखं प्रतीपयत् ॥ कदाचिदासन्न
 सखीमुखनसा मना बध्नुं चित्तं मनसिना ॥ श्रुयावतो बध्नुनिवासमा
 लनः ॥ ह्लादयान्तायतयः ॥ समाधयः ॥ श्रुथानूपाहिनिवहताषित्ता
 नाश्वनूपायुनूपागनीयसा ॥ प्रज्ञास्यपस्थितिकदाख्याया ॥ जगत्समा
 नीतिस्वर्गिस्वर्गिभूतः ॥ विमूयसाहात्रमहाय्यनिश्चया ॥ विलासदृष्टिः
 प्रविलुफचन्दना ॥ ववन्धवाला नूपावक्रवल्कलं ॥ यथाधनासंधविगीर्ण
 संरुति ॥ यथाप्रसिद्धमधूनेतिना नूहे ॥ ऊठाहित्रयवमरुहयाननी

निखलित्पुनिरुदय्या मयूत्रपित्रकथनः ॥

पुनरिच्छाश्च निश्चया ३ विग्रहः ४ शालयस्य ३

संविवाश्वयवनासंरुतिसर्वनाशनेतिवा ५

अत्रापि सवाकनागः कर्मसंख्यायां गच्छति न तथाविति विश्वः ४२

कविर्ह २

उत्सववाक्यवत् २

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

लाता (च) लास विक्रियति रु २४२ मूकमखलाति रु ४१२
 पदि १ लाहेतमुकावि (नियमावतसलीयमन ४२) कूलमसुहृताविचरिभायन ४४
 मोयो ३ कन ३ पाव ३ यो ३ उपभनरुयवरुणयायनीय

नखद्यदधितिहिनेवयकजं सगवले संगमपिपुकाहीनं॥यति क
 लंसा कननामविक्रियां वनायमांशदि सुभम्वरात्रयां। अकात्रितसु
 र्वनिवदयातयां सनागमसां वसनायुलस्यदां॥विहृष्टबागमदधना
 निवर्हि न ४ सुनाइनागम नृतिनात्र कछुकागा। कछुकागादानपत्रिकन
 हुलि ४ कनाकसुगुपुलयां नयाकन ४॥महाहृष्टयापत्रिवर्हनचने ४
 स्वकलयोत्रपियासंदूयना। अनागसावाकूलतायंभयिनी निषदू
 षीहृष्टिलेवकवल॥यूनर्तुहीर्तुनियमसुयातया दयीषुनिदय

सुतया १ सनाग ४ अयुनादिनाविलयनं नना नृतिना लाहिना तं ४
 जोनी २ पाव ३ गलुक ४ कनू कदीय ४
 वाकूलगाडयभाडुमोडुकमिब कडुयसा ४२
 पाव १

नखद्यदधितिहिनेवयकजं

३०

नखद्यदधितिहिनेवयकजं

सनानीनपि ३ वृका ३
 अतलसा ३

विनाधिसुले ४ सिरुगडादि

वार्थि नंदयं लतासूतनीषुविलासवष्टिर्न विलासदष्टिर्न विभक्त
 लसूव॥अनन्दितासास्ययमवष्टकान् घटसूनप्रसविनीयवर्द्धः
 यना गुहापियंषां पुथमाफजन्मना नयूगवात्सल्यमयाकत्रिष्टिति॥
 अत्रधवीजां कलियानलातिताः तथचतस्याहं विभक्तविष्टसूक्ष्मयः
 धनदीयेर्नयने ४ कूटहलात्पुन ४ सखीनाममिमीतलावन॥कना
 रिषकां कनजातवदसां लेगुरुनासंगवर्तानिवातिनी दिदं कवल
 मृषया लयागम नधर्मवृद्धवृवय ४ समी अत॥विनाधिसुले ४ न

अहितदिता ४
 मोनामर्जास मोलली वल्लवल्ललमळियां रु ४२
 कूरकतु ४ रु ४२ नमितसम ४३
 निवातं कललमि तमितसम ४२
 पाव १ २
 दष्टमि २

विनाधिसुले ४ सिरुगडादि

वर्तिमानं ४

पवित्रमं ४

दुमेव केन च न नेवही ह न अहि म न न यु स व न पृथ र ला दी ना अर्चि ता कृति ता वि अ

मो ३ अलक प्रवक्त माल वकु वा ल मे ३
४ (मेनी) वरु १४ लाठ या छि यो १० ल म ३ ११

मो ३ अलक प्रवक्त माल वकु वा ल मे ३
४ (मेनी) वरु १४ लाठ या छि यो १० ल म ३ ११

वमसु नं कु मे वही ह य स वा र्चि ता ति धि । न का टं का ल क न स म्पु ता न ल
न था व न न च व रू व पा व नी ॥ य दा रु लं पू र्व त य ४ स मा धि ता न ता व ता
ल य म मं रु कां कि तां ॥ न दा न प अ ल व नी न मा र्द वं न था म ह सा च विः
हु प व कु म ॥ कृ म य यो क न्द क ली ल या यि या न था मू नी ना च वि तं य म
अ ता ॥ कु व म्प य ४ का अ न य म नि र्मि तं मृ दू य क ण च स सा न म व व ॥
हु वो व हु लं क ल तां हु वि सि ता रु वि हु जं म ध ग ता स म ध मा वि जिः
ल न हु पु ति घा ति नां य हा म न न्य द छि ४ स वि ता न मे क ता न थ हि त र्क

गो २

निधियं म न्य ३

वृष का सी २

कामलं मृदूलं मृदू ल म न्य ३

सा ना व अ छि नां न च ति वि य ३

न प न ४ स वि ता न वि नि ल म न ४ १

मू र व स्य २

गह कि च ति ध क य १० ल म न ४ १

स्व का ४

मालु यो ३

स वि हु र्ग र ह कि हि म् र्खं न दी यं क म ल वि यं द (मो) अ पा म्प या ४ क व ल
म स्य दी र्घ या ४ ए ने ४ ए ने ४ ध मि क या क र्ण प द ॥ अ जा वि ता प छि तः
म म्प क व लं न सा ल क स्या दू प न थ न स य ४ व रू व न स्या ४ कि ल पा न
त वि धि र्ने व क वृ लि यं ति त्रि क सा ध न ४ नि का म न फा दि वि ध न व क्रिः
ना न रु थ न (म) न्ध न स रू न न या न पा र्थ य वा नि हि त्रू कि ता न वे र्हु वाः
स हा म्पान म म्प र्दु र्दु गी ॥ कि ता क र्ण प म्प ता ति ता ध ना ४ य था ध ना स
ध नि या न वृ ल्ति ता ४ व ली पू त स्या ४ स व लि ता ४ य थ दि न वि न ल ता हि य थ

वा य व त ल ना न ल ग र्ण २ य ति त्रि क र्ण नि सा ध न म्प या य ४

वि व ली पू १

कु म ल य ० १

श्रुतिवचनस्यार्थमित्यमत्र ४३
गमयति स्म ३
यदर्थं यत्र २

योषतेष्वसहस्रोक्तमित्यमत्र ४३
कंपमान १

साकीश्वरवासस्यत्र ३ २ छिद्यमान ३

मादविन्दवशाद्विलासया कामनिकनवासिता निवन्तवायनत्रवात
वृष्टिष्वलाकयन्मिविते सुष्ठि मयेर्महातपः सा द्रव्यवृष्टिता ४ क
या ॥ निनायसां ह्यर्थदिमा ॥ नानिला ४ सहस्रत्राणी नूदवासतस्य जाप
त्रस्यत्रा कुन्दिनिवकुवा कथा ४ यूत्रावियूकमिथूनकपावती ॥ मुखन
सायद्रसूगन्धिनानिनिष्ठि युवयमानाधत्रयगुणाहिना ॥ दुषात्रवृष्टि ४
कनपद्मसंपदा सत्राजसंभानमिवाकत्रादया ॥ स्वयंविणी लुङ्मप
लुवृष्टितापत्राहि काष्ठानपस्रुयायून ४ नदय्याया कीर्त्तन ४ प्रियम्

वृष्टितनजीवनस्यमत्र ४१

संभान २

त्यक्ता पतिता २

काष्ठामानप्रकषेवतिविश्व ४१

३२

दृश्यन्नयकि २

कर्मजिन ३

वालासादृश्याचारस्यमत्र ४३

प्रथमाधमा ३

दां वदन्त्यपक्षमिति नांयूत्राविद ४ ॥ मृत्तालिकायलवमवमादिहि ३
ने ४ स्वमंजुस्ययन्तु रुर्निष्ठा ॥ तपः ४ त्रैवे ४ कथिने त्रैपाकिं न ॥ तपस्वि
नां दूत्रमधश्चकात्रसा ॥ अथाकिं नाषाटधत्र ४ प्रगल्भा ॥ कालनिवृ
द्धमयनतजसा ॥ विवर्णकश्चिक्कटिल्लुकावन ॥ त्रिजवद्व ४ प्रथमा
धमायथा ॥ तमाति ॥ धयी वदमानपूर्वया ॥ संपर्यया ॥ पुष्टिदियाययावः
नी ॥ रुवन्ति सांभ्यापिनिविष्टवतसां ॥ वयूर्विषाषधभिर्गोत्रवा ४ क्रिया ४
॥ विधिप्रयुक्ताम्यति गृह्यसंक्रियां ॥ पत्रिधर्मनामविनीयवद्वती ३ मांस

तंजटिल ३

श्रुतिथेसाध्याश्रुतिथयी ३

सूत्रयहृत्तया ३

सूत्रयामास ३

जटिल १

समस्तपि २ छिन्नविना २ अत्रावतजुतिलवदमानश्रुदत्र ४ ससर्वोयहनिर्यस्याहया ३

हिमादिनिमिर् १

३३

मञ्जरीसहस्रलक्षणां

नव२

हज्जेनी नव३

यद्यनयनेवचक्रुषा. प्रवक्रमवकुमनूजितकुम॥ अयिक्रियाथसु
लहंसमिक्कं. जलान्यपिक्कानविधिदमातिता. अयिस्वसक्कानयसि
प्रवरुस. शनीत्रमायखलुधर्मसाधनी॥ अयित्वदावर्जितवात्रिसम्हः
न. प्रवालमासामनूवन्निवीनूध्या. विवाज्जितालककपाटलनन. तुला
यदावाहतिदत्तवाससा॥ अयिप्रसन्नहृदिषूतमन४. कनसुदंरु
प्रणयापहाविषा. यंतुल्लादिप्रचलेर्विलावने. सुवादिसायंत्यमिव
प्रयुञ्जत॥ यदूयानपावतिपापवहयन. नूपमित्यवहियात्रितदव४

हनि॥२
जने॥

सत्यमव॥

अलीकनी
त्रियेधेनिसपला

अजिह्वसत्र४३
अदरु४पवि
असम४३

नव॥

निर्मले३ हज्जेनी३

पविशकृत्३

कलान्यहिरुनानयाविसमत्र४३

उद्योत्राष्टदनेनसवलाकनेनी वयसा४१

। तथाहि तं लसूयात्रदर्शनतपस्विनामयूपदशताङ्गनी॥ प्रकीर्णः
सफर्विवलिप्रकाशिरि. सुधानगमः४ सलिलेर्दिवन्धूने४ यथात्वदी
येऽथविनेत्रभाविनेर्महीधत्र४ पावितप्रषमावय४॥ अनेनधर्मः४
सुविष्णुसमयम. त्रिवर्गसात्र४ प्रतिरुतिरुविनि। त्वयामनानिर्विषयं
र्थकामया. यदकनवयतिगृध्रसयना. प्रयूकसत्कात्रविष्णुसमात्सना
नमापत्रसंप्रतियरुमर्दसि। यत४ सगीसन्नतगमिर्संगतं. मनीषिरि
४ साफपदीनमूयता. अताप्रकिचिरुवतीवक्रुक्रमं. दिशतिरावाद्

यथास्यारुथा४ त्रिवर्गधर्म४ कामार्थसमत्र४४
सत्यसापदीनयादिसमत्र४१
प्रतिरुसत४

पञ्चमः

पपन्नवापलः। अयं जनः प्रसुमना सुपाधनं नवदुहस्य पुति। गम
 पुमर्हसि॥ कूलप्रसूतिः प्रथमस्य वधसं। छिला कसो न्ययमि वादिनः
 वयूः। अमुग्यमैधयसूखन वस्य सुपः रुल स्यात्किमिहः यत्र न व
 ॥ रुवह्यनिष्ठादयिनामदूः सहा ननखिनीनां प्रतिपहिनी दृणी। विवा
 नमार्गप्रहितनवतसा नदधत न च कः। अदविलयि॥ अनन्य। अह
 विरुवयमाकृति। विमाननासूक्त कृत् पिठुर्गृह। यत्राहिसर्षानन वीलि
 कः कर्त्तुः। यसावययन्नगवत्तसुविषू॥ किमिह पास्या रुवधनिधोवन

अनकमान् ४ सहावनाया ४

प्रतिपहि पृष्ठो व अमी कायव
 यका १

३५

लोचनयतिविषयः

धनं त्वया वाच कः। अहिवल्कलं। वदपुदाषविनिकीर्यता नका विहाव
 नीयय नृणय कल्पन॥ दिव्यदि प्रार्थय सृथा धमः। पिठुः प्रदक्ष सु
 वदवरुमयः॥ अथययन्ता नमल समाधिना नवलमन्विषति मृग्यः
 महितन॥ निवेदिनं निखसितन। अथ अमनसु मसं गयमव गहना
 नदधत प्रार्थयितव्यं वत रुविषति प्रार्थन दूत रुः कथं॥ अहोहि नः
 कोपितवसिनायवा विनायकः। अथ लघुन्यतां गता। अयं कृतयः ४ सुथ
 वन्धिनी कृताः कपालदः। अकलमाययि कलाः॥ मूनिवने स्ना मतिमाव

आलायविगला १

अवेधीनयति २ दृढवधना

निहावः

कियत्विन कटिपयवकालायाप्यथासि ४
सहस्रगत्ववर्त २

कटिल ३

कर्त्तितां दिवा कवा पूरु विरुषा स्य दी। ११११ कल खामि व पंथ तादि वास
वन स ४ कस्य मना न दूयत ॥ अवे मि हो रा ग्य म द न व कि नं न व प्रियं य
थ तु ना व ला कि न ४। क वा ति ल कुं न वि म स्य व दूषा न व कु मा नी य म ना
लय नून ४। कि य चि नं अ म्या सि गे नि वि य नं म मा पि पू वं प्र म स चि न न
प ४। त ना र्द्ध हा ग न ल रु ख का कि नं व रं न मि क्ता मि व सा धू व दि डी ॥ नू ति य
वि स्थ हि हि ना दि ज न ना म ना ग नं सा न ११११ क र्त्ति सि डी अ ना व य स्या म्यः
त्रि या र्थ व र्त्ति नां वि र्त्ति ना न ज न न न मे क न ॥ स खी न दी या न म वा व

३५

यथास्यारुथा १

का ३३ समान वयसा म २

उक्तवापिना १

मत्सर्गि १
पाव २

दाहा ३

वर्त्तिनं नि बा ध सा। ११११ व व क्क रु रु ल ॥ य द र्थ म क्ता मि धा क्क वा न
ली क र्त्त त प ४ सा ध न म न या व यू ४। नू यं म रु न्य प रु ती न वि शि यं स्य
तु दि गी ११११ न व म न्य मा नि ना ॥ अ नू प रु र्थ म द न स्य नि य हां पि ल कः
पा ति प ति मा म् मि च्छ ति ॥ अ स क्क क्क का न नि व र्त्ति न ४ यू ना यू ना वि म पा
फ म् रु ख ४ गि ली म् रु ख ४। उ मा द दि या य न या न म क्क। ११११ दि गी र्त्ति म् रु नः
पि पू ष ध न न ४। न न ४ प रु ल्प न द ना पि रु र्त्त ह ल ला टि का व न्य न धू
स ना ल का। त ना तु वा ला ल रु त्ति न र्त्ति रु वा न र्त्ति हा न गि ला न ल ष पि

अविवा न नि ली म् रु ख ४ म न ४३
द द य पा न वा न मा न र्त्ति २

या ला १

36

卷之八

वास्तवावृक्षवृषलसने॥४॥ पार्थत्या२

नेष्टिकाउत्तरवात्रिरुदः ३ सख्या ३ - रुग्णे ३

मिताद्वयं विनयवस्तुपित्तवागं राषण॥ यथा धर्मं वेदविद्याम्वनतः
या जनाय मूवे ४ पदलंघनात्सक ४ तपः किल दंतदयाफिसाधनं स
नात्रथानामगतिर्न विद्यता ॥ अथाह वस्तुविदितामह ध्वनस्तुदर्थिः
नीलपूतनववर्णसा ॥ अमललाया सत्रति विविक्त्यर्तं तवानुवर्तिन
वकर्तुमस्तुह ॥ अवरुतिर्वन्धपत्रकथं नूतं कर्मायमाभूकविवाह
कोटुक ४ कत्रलसम्भार्वलया कृताहिना सहिष्णुतगल्यथमावलम्बः
नी ॥ त्वमवतावत्यविविक्तयस्त्ययं कदाविद्यं नयदियागमर्हन् ४ व

३०

ममनतिकर्तृणी ४ उल्लवावितर्क ३

कत्रल २

धूदकूलधरसहसलकलं गजाजिनं ॥ अनितविन्दुवर्षिवा ॥ वरुष्क
मृस्यप्रकवावकीर्णया ४ यत्रापिकानामतवानुमंस्ताना ॥ अलककांका
निपदानिपादया ॥ विकीर्णकलसूपत्रतरुमिषू ॥ अयूकत्रुपीकिमि
त ४ पत्ररुवे ॥ छिनत्रवद ४ सुलहं नवापियन् ॥ सुनदयेस्मिन्नुहविव
न्यनास्यदं पदं विनारुस्मत्रज ४ कविश्रुति ॥ अयं वतन्या पूत्रतावित
वना ॥ ययूटयावानवाजरायया ॥ विलासवर्द्धकमधिष्ठितं त्वया
महाजन ४ स्मन्नसुखारुविश्रुति ॥ दयं गतं सम्युति ॥ अवनीयतां सः

विवाहितया २

मादूट २ ईषसा ३

उद्यो ३ (१) उद्यो ३
निवस्य १

मागमप्रार्थनया कपालिनः १ कलाय सा कात्मि मनी कलावतः त्वमस्य
लाकस्यवनगुको मूदी ॥ वयुर्वि नूपा क म ल रु रु म ना दिगमवतन
निवदिनं वस्य वयुर्वि नूपा क म ल रु रु म ना दिगमवतन
लावनः ॥ निवदुयासा द स दीप्तितात्मनः १ क न दि ध र्व क स्य पू ध लः ३८
कला ॥ उय क न साधू जन न वेदि की ॥ म म न १ ल स्य न मू प स न्क्रिया ॥
ॐ ति द्वि ज्ञा नो पु ति कूल वा दि नि पु व य मा ना ध न ल क का य या वि कूः
कि न रु ल न या क न न या वि ला व न ति र्था गु या न ला हि न ॥ उ वा च वे
अननप्रकाश २ वद सर्व धिनी क्रिया ३ को न ह त्रे स्य ३

उद्यो ३ (१) उद्यो ३
सम्यक्त ३ हा म्भ गू न्या २ अस्मान् समं धि स्य र्थ १ पत्रि हित स्य र्थ वा ३

नयप्रमार्थना रु न न वस्ति नूनं य न व मा लु मा ॥ अला क सा मा न्य म
वि न्य रु रु क दि ष कि म न्दा म्भ नि नं म हा त्म ना ॥ वि प यु ती का न य व न
म म ल नि ष य ग रु ति स मू ल क न वा ॥ रु ग रु न ध स्य नि वा नि ष ४ स न
४ कि मा हि ना सो य रु ना स रु हि रि धा अ कि ३ न ४ स स रु व ४ स स म्य दा
स ला क ना थ ४ पि रु स द्य ग व न ४ स ही म नू प ४ नि व ४ लू द्य र्थ ग न
स क्रिया थ थ वि द ४ पि ना कि न ४ वि रु ष ४ हा से पि न रु रु गि वा ग न
जि ना ल वि दू कूल ध नि वा ॥ क पा लि वा स्या द थ य न्द्र ४ ष रं न वि ष्य मू

अस्मात्प्राप्त ४ रु अस्मात्प्राप्त ४ रु हि रि र्था पा ले ४ ४ कश्चन ३
पल वलु ध नि वा १ विषय ४ २ यत्रि ड पि अ कि ३ न न्ति वि ष्य ४

वासिदास४, कीतसुपाहिवितिवादिनिवन्धमोलो। अक्रायसानियमर्ज
क्रमसूत्रसर्ज, के४४ हलनहिपूतनर्वताविधरु॥ ॥ निशिकुमात्र
सम्वमहाकायउमात्रय४ हलादयानामयवम४सर्ज४॥ ॥ अथविः
धामन। गेत्री, सदिदहामिथ४ सखी। पितामहुरुतानाथ४, पुमाणीकि
यनामिति॥ गयायादतसंदध, सावरोनिहनापिया। दूतयष्टिविवा
यास, म। योयत्रहतामूखी॥ संत। धतिप्रतिज्ञाय, विरुचकधमयूमी
। अषीन् अतिर्मायात्सफ, सखात्रसत्रधमन४॥ गयहामल्लेखाम
निकत२

गेत्री३ निध्या३ निव३
महादव२ विरुच२

पुमाणीसादि
कष्टरुष्टा२

५४०
विद्यामिति विधेः

कनलाना२ कल्पनमूहद२
नजायुर्ककुर्वन्१

समूह२ उवाहूष२

हमाविकावाहेमं बल्लनयषांत३

शानयनसुपाधना४। सात्रुधतीका४सपदि, यादूनासन्पूत्र४यरा४॥
आपूनालीत्रमत्यात्र, कसुमाकत्रवीविष्वा। आकासगंगाधनसूदि
अगमदगन्धिषू॥ मूकाऊकायवीनानि, विठनाहेमं बल्लला४। त्रलो
कसूग४युवुअः कल्पककाव् वात्रिता४॥ अथ४युष्मापिता। धन, समा
वर्जितकठना। सहस्रं वसिनासं धनं, सयधममूदीदिना४। आस
कवाकलनया, सार्धमूहतयारुवा॥ महाववाहदं अया, विद्याका
पलयापदि। सर्ज४। अषयुलयना, दिध्यानत्रनकनी॥ पूनातना४
सूर्यत३

नानवान३

अवीर्ण ३
इति संहार ४१

सती साधी प्रतियुक्त सप्तम ४३
उपहाग कर्षक सप्तम ४२

पूजा विदुहि धर्मा नृत्ति कीर्तिता ४१ प्राकानां विदुधानां पत्रि पा
कं मूय यूषा ॥ तपसा मूय तु ऊना १ रुला न्यपित पखिन ४१ आदिकूल
का ॥ ५ ॥ तवां मधुगता साधी पल्ल ४ पा दार्थि न रुणा सा ददिव तप ४
सिद्धिर्वरु सव द नृन्धनी ॥ तामो न वरु द न मूनां पध दी ४१
न ४१ मूनां नित्य नाक्ष वा वरु हि मरि नं स नी ॥ तद धना द रुक्म
रूया दा नार्थ मा द न ४१ क्रिया यां ख लू धर्मा नां दायं लू ल सा धनी ॥ धर्म
लोपि पदं च का त्रि त पा र्व नी युति ॥ पूर्व प न ध नी त स्य का म स्या च्छु सि तं
पू न न पि १ व व सार्थ १
अनृन्धनी ४ वरिण ३
साधना ३ व व सार्थ १
लोपु नृन्धनी व नी सार्थ ४२ उ न ति न १

प्रस्ताला माक्षित काया २

वद २

अस्माकं ३ पथि न २

सा स व दा धा ना न १

मन ४॥ अथ न मून य स्रव च्युति य लू ज ग हु नू द मू व न नू वा ल
४१ प्रतिक क कि न व व ४॥ य द्रु स म ग म मा नं य द लो वि धि ना दू नं ॥
य च न फ न य लू स्य वि प कं रु ल म य न ४॥ य द ध रू ल ज ग नां व य मा
ना पि ता लू या ॥ म ना न थ स्या प य थं म ना वि ष य मा लू न ४॥ य स्य व न
सि व रू ध ४॥ स ता व लू ति ना म्ब न ४॥ कि पू न वृ क्क या न र्य रु व व न सि
व रू ना ॥ स ल म क च सा मा च्छ प न म धा स रू प दी अ न्य दू व रू ना नः
स्मा लू म न नू य हा रु वा ॥ लू स रू वि त मा लू नां व दू म न्या म रु व र्य ॥

रुवता ४
मिगुणा व न ४
अथ व ३

वयं उपासह २

किंनरप्रणय
वाक्यप्रणय

विषयप्रणय

अस्माकं

बुद्धिप्रणय
रुद्रप्रणय

प्रायः प्रणयमाधरु सुगुणरुमादयः प्रायः प्रणयिर्विप्रपादुत्त्वद
नूध्यानसंरुया साकिमावयतुल्य सक्तनासासिदहिना साकादृष्ट
सिनपून विप्रस्त्रावयमञ्जसा प्रसीदकथमात्मानं नधियां पधिवरु
सा किंयनसृजसिवाक मूतयनविरुषिवा अथविप्रस्यसंरुहा रा
गः कनमप्रवर्त अथवा सुमरुत्वा सार्थनादवतिष्ठत विनिता
पक्षिना साव क्वाधिनः कत्रवामकिं अथभोलिगतस्यन्या विषयेद
गतां हुरिः उपविन्यसुतां गतां पुण्यारुपत्रमध्वनः विदितां वायः

४२

अस्माकं प्रकाशप्रणय

तत्प्रायः

युष्माहिः

कथितं

संवाधनं निर्मथावात्रुलित्वत्रतिदयात्रिसमप्रणय

थास्वार्थं नमकाविनयवर्तयः ननूमूरिहिनं हारि ववर्तुतासि
सुविता साहं रुक्मातुत्रेवृष्टि विप्रुत्तानि ववातकेश अत्रिविप्रकः
नेः दवेः प्रसूतिप्रतियावितः अतहाहूमिक्कामि पार्वतीमात्सजः
मना उसादाय हविर्हाकु र्यजमानं वात्रनितां मसदार्थयुष्मा
हि र्याविनयाहिमालयः विक्रियायेन कल्पन्त समध्वः सदनृष्टि
ताः उन्नतनक्तिमिता धूत्रमूवहतातुवः गनयाजिनसम्वधं वि
रुमासप्यवधिनां प्रववायः सकन्यार्थमितिवातापदिध्वतां प्रव

याता

समाज्ञादनं रुद्रप्रणयः

प्रहवति

युष्माहिः

जिविता

युष्माहिः

स्वाध्यायः १

५ विवाहा मुखसाम्या

पूजन्ती सुवनिश ह्रीं नमः ४२

गङ्गातुलङ्गिता ४

प० क्रियाया

असमाक ३

[illegible]

काशीप्रयागख्यं २

पविग्रहपविनयप
षष्ठसुव्यास

ऐसि ति मदिना क ३१५

गृह ३
मूर्ति कुल्य १

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ल कामति वाञ्छे व. व सति वसुसम्यदा। स्वर्गहि स्यन्ति व मनं, कल्ले
वायनि वसिनी॥ गंगमक्षान ४ पत्रिदिफं, वषात्त कलितोषधि। वृहन्म
लिजिला गमलं, स्वर्गदयिमनाह्वनी॥ जिनसिंहरुया नागम, यज्ञाध्यवि
लथानय ४ यक्षा ४ किंयून्वा ४ योना, वनिता वनदवना ४॥ निषत्राः
सकमया लं, व अन्तययवधननी। अन्तर्गर्जितसंदिग्धा ४, कंनलो
मूत्ररुसना ४॥ यगु कल्पद्रुमे नव, विला लविटपांशुके ४। गृहवृष
पनाकाशी, यथोनादवनिर्मिता॥ यगुसूटिकहर्म्यषू, नकंसापानः
विलम्बिदगुहायां व विलड्येधवाहयन्तिमदिनीकन ४४

प्राची

बालवादा

किं कपि क्व न या निहृगं न या शाब्दियं

रुवति ३
नात्र काना १

इद्विनरुसदधानुमितिः
तमर्धमिति लनसः नूतिमिदिलीकनः ४२

पंकिष्ठातिषाप्रतिविम्बानि प्रायूर्वत्पेहावतां॥ यजोषधियुक्ताः शत
नक्तं दर्शितं संवत् ४१ शूनरिहिरुक्तमिष्टात् ॥ दूर्दिनयहिरुक्ताः ४॥ यो वः
नान्नं वयं यस्मिन् न नक्तं ४ कूसुमायुध ४ वनि ४ खदसमस्तनं निडासं
विपर्यय ४ कुरुंदिहिरुक्तं ४ सकम्पाष्टं ४ लिङ्गादुत्तिगर्जने ४ यजुकाये ४ क
ता ४ स्त्रीत्तं ४ मायसादार्थिन ४ प्रिया ४ सत्तानकनचूकाया सुफविद्याधवा
धर्मा ४ यस्मथापवनं वाचं सुगन्धिगन्धमादनी ॥ नक्तान्कमृषयादिया ४
प्रभुहेमवर्गयूनी स्वर्गाहिरुक्तं सुकन वक्षनामिवमनि ॥ न संय

नर्मदूर्वन
हिमालयस्य

अथवति१ गल्धनमदनमदिति२

हृदयसाहितात्रिका
मृदुलीक २
गृही
संघयः

सवि.प्र.लि.३
या ०३३ वरी प्रकृत्या।

दिवा रुवा १

निगिर्वै ग॥ द॥ नृखदासु वीदिता॥ श्रुवंत नृ० रू० रा० ने० नि० शि० ता० नः
लनि० थले॥ ग० ग० ए० द० व० ती० रू० सा० य० थ० वृ० द्र० पू० न० स० मा० ना० या० न० क० रू० स०
मा० स्त्री० व० न० रू० मू० नि० य० न० म० या० ना० न० र्घा० न० र्घ० मा० दा० य० दू० ना० स० स० य० यो० नः
ग॥ न० म० य० ता० न० शु० न० रि० या० द० न्या० से० र्व० स० न्ध० ना॥ धा० तु० ना० मु० ध० न० ४० यो० शु०
द० व० दा० नृ० वृ० ह० रु० ४० रु० र्थ० व० नि० ला० न० स० ४० सू० य० का० हि० म० वा० नि० वा॥ वि० धि०
य० यू० क० स० का० ने० ४० स्व० य० मा० र्ग० स्य० द० ४० क० स० ने० नो० कु० म० या० मा० स० शु० द्रो० न० शु०
द० क० र्म० रि० ४॥ न० शु० व० ज० स० ना० सी० ना० नृ० द० ना० स० न० य० नि० य० ह० ४॥ रू० स० वा० न० म०

तर्ककृष्णः

मिलात्रवमस्तु३

पविस्तृतहिमवानिव ३
अविहि ४२

五

लोह ३
सर्वा नपा ०१

श्रुतवर्जितं ४ मरुह ४

कथयन्ति ४

नार्कः प्राञ्जलिः ४ पृथिवी धनः ॥ श्रुतमथादयं वर्षं स दृष्टकृत्सु मरुती
श्रुतर्किना पयनं वा दर्शनं युतिरुतिमा ॥ मूटं वृधमिवात्मानं हेमीरुतमि
वायसीरुमर्दिवमिवा नूटं मन्तरु वदनयुता ॥ श्रुययुतिरुतानाः
मन्तगम्या सिधुयथा यदद्या सिनमरुहि रुदितीर्थं पुनरुता ॥ श्रुवेमि
युतमात्मानं दयनेवदिशारुमा ॥ मूर्द्धिगंगमपुपातन ॥ धीनया दाम्
सावव ॥ रुतमेष्यरावन ॥ सावव वनलकिनी विरुका नूयहमन
देनूयमपिमरुता ॥ रुवसावनाकाय पवितावायमूर्द्धता ॥ श्रुपिष

४५

पूमाक २

वर्द्धमानाय १

रुवताकिं कथन

वजागुलस्य मर्द्ध २

तमाधक गुलशिवतिविष्य २

यदिशाय ३

श्रुगमर्द्ध ३

फदिगक्तानि नास्तानि पुरुवन्ति मा ॥ नकवलं दत्रीसंरु राखना दर्
ननव ॥ श्रुतगर्जनमपासुम् नरुसापिपत्रनम ॥ करुयां वानपध
मि स्यावन्किनायदिधन ॥ संकमत्या वनायेव ॥ पुस्तनरुवतामिहान
धपिनावत्सिषि दास्तमं दागुमरुथा ॥ विनियागपुसादाहि किदना
४ यरुविषूष ॥ ननवयममीयाना ॥ कन्ययं कलरुषला ॥ कनकनार्थिना
यूय मनास्तु वासव सुषू ॥ नूयुक्वां रुमवार्थं दत्रीमुखविसर्पिण ॥
दिविवपुनिनयन ॥ यागहानरुमालय ॥ श्रुधमि नसमग्रध मदाह

उरुवृ ३ नाका २

मर्द्ध ४

वाच्यां ४ आसयानविमानाच्छीत्यमत्र ४१

आयत्ति १ गत्रा १ यदिहि ४३ निर्व ३

नविष्वधूर्यो नमिवाधनि॥ यागि नाय विविचिन्वति, कृणा ह्यनत्रवलि
नी। अनावृत्तिरु वयस्य पदमा कर्मलाविष ४॥ सगदृहि तत्र सा का. साः
कीविष्यस्य कर्मलाया वत वत्र द ४॥ सु. वसत्स कामिते ४ यदे ४॥ तमर्थ
मिवहात्रणा, सतयाथा कुमर्हसि॥ अ. अ. या हि पिठ ४ कन्या, सरुह्यप्रति
पादिता॥ या वन्यमानिहूतानि, क्वावनातिवनातिवामा नत्र कल्पयन्तः
ता, मी. अ. हि जगत ४ पिता। पुनम्यलितिकलमय विवृधा सुदनकनी॥ व
त्र। अ. वं ऊयन्तस्या, धूगमतिमत्रीविहि ४॥ उमा वधूर्ह वाद्याना, यावि
पार्वती २ लाहिनी कवेनु १ पार्वत्या १

४१

युत्रस्त्राये ३

नानं भवयी॥ वत्र ४॥ सु. त्रं अ. त्रं कलाहूतयविधि ४॥ अ. कला
सूयमानस्य, वन्दस्यानन्यवदिन ४॥ सु. तासं वन्धविधिना, रुवविष्यगु
नार्तुनू ४॥ उर्ववादिनिदं वर्षो, पा. अ. पिठ ४॥ अ. मूखी। लीलाकमलय
गति, गलयासासपार्वती॥ लेलु सु. पु. पु. काभापि, भनामूखमूदेकन।
याथनगृहिता ननु ४, कन्या. अ. हि कू. तु मित ४॥ भनापिमन्यतत्सय, प
त्यकार्यसमीवितं। रुवन्ति पत्रियावि. अ. रु. रु. व. यति उता ४॥ उ. दम
गारु वन्त्ययि, मिति वृक्षा विमृश ४॥ अ. ददववसा मन्क, मन्कलालकः

३४ कू. उ. विना गृह ४ गृहिती ननु यथानयवा नाद ४॥

लेल ३१

वक्रियकात्र ४॥ अ. पु. ग. दे. रु. ३

नहता। नहिविष्णुमनोत्रि, हि का लं पत्रिकल्लिना। अर्थिनामूनयः पा
 फं, गुरुमधिरुलंमया॥ न ता व दू काननया, मृषीनाहमहीधत्रः॥ यं
 नमनिवः सर्वा, शिलावनवधूविनि॥ नृप्तिनाथक्रियादात्र, नहिनन्द्य
 निवर्वचः॥ आर्तिनाहिनधयामासुः॥ पूनः पाकाहित्रिनिर्का॥ नां पुष्पमा
 दवमुक्त, जाम्बूनदवर्गसिका॥ अकमात्रापयामास, लज्जमानामनूध
 नी॥ नन्माननवर्धमूर्वा, दूहिदुःस्तरुविक्लवा। वनस्यानन्यपूर्वस्यवि
 ष्णुकामकनाहु। हो॥ वेवाहिकीकिथिपृष्टा, सुखलं हवर्वधूनां नंया

४८

पूनः पाकाहित्रिनिर्का॥

हिमालय १

हादूर्ध्वमाख्याय, वनूथीनपत्रियहा॥ नहिमालयमामन्त्र, पूनः प
 अचमूलिन। सिद्धीमोनिवयार्थ, नदिसृष्टः खमूनययू॥ पञ्चपति
 वपिनान्यहानिदुक्क, दगमददिसूतासमागमात्कः॥ कसयत्रमवर्गः
 नविषकुर्य, धिदूमपितयदमीष्ट॥ निरुवा॥ ॥ नृत्तिधकमानस
 म्बवमहाकायउमापुदनातामषषः॥ ॥ अर्थेषधीनामधिप
 स्यवक्षो, तिथेवयामिदुगुलनिताया। समनवन्धुहिमवान्दतायावि
 वाहदीकाविधिमन्वनिष्ठता॥ वेवाहिकेः कोहुकसन्धिधने, गुरुगुरु
 वलुमस्य

योगरुद २

अकूचनवनितादयारावा ४४

वृत्राणि वेषाः इति मदिनीक ४२

यद्यप्यत्र चिंतयन्ती आसीत् पूर्व सा नू म मा नू बा ग द न ४ पूर्व चै क कू ला
 प म यी ॥ स नान का की र्ण व ठु य थ न . ची नां शु के ४ क ल्पि न क ठु मा ली ।
 हा सा क ल का श न मा नू ल नां स्त नां न रं ख र्ज र्वा व हा सा ॥ प्र के व स
 ला म पि यू य पं को वि न स्य दृ श्व व म ना हि न वा आ स न्न या गि य दृ ला ति ४२
 पि शा नू मा वि ण वा च्छ सि न व रू वा ॥ अ न्न य यो व क मू दी नि ना णी ४ सा
 म लु ना न्म लु न म न्च डु का स म्ब न्ध हि न्ना पि गि न ४ कू ल स्य स्त दृ रु द का
 य न नं ज ग म ॥ मे य मू दू र्ण ण ल च्छ न न था गी ग ना सूरु व रू लु ना
 दृ ह १

४२

सिद्धार्थत्वषधवनरूपमत्र ४२

कृष्णपदावसानं ७ क्ल पदं रूपमत्र ४४ ज्ञेयम् ॥
 कोऽयं कविकाव्यमत्र ४२

प्रान्त्या ४ ण वी न प्र ति क र्म य कृ र्च न्धु क्रि या या ४ प ति यू य व ल्य ४ सां गे
 न सि द्धा र्थ नि व ग व र्हि र्द्वो य वा ले प्र ति हि न्न ना गी ति न्ना रि को ण य मू
 पा रु वा ल म ल्य न न य थ म ल श्च का न ॥ व र्हे च स म्य क् मू य ल वा ला न व
 न दी द्वा वि धि सा य क ना क न र हा ना र्च दू ला व सा न स न्धु क मा ण व ण
 ण कू ल ख ॥ नां ला ध क ल्क न क नां ग ने ला मा ण न का ली य रु ना कू बा ग
 । वा सा व ण ना म रि ष क या र्थ ना र्थ ध्य ठु क्क रि मू खी च्छि ति न्यू ४ वि न्य स्त
 वे दू र्य णि ल व त सि ना व र्ज मू का रु ल रु कि वि यी आ व र्जि ता स्य प द क

४२

कविह्वय ४२

बालास्य त वाच्यं
 आसन्नमिषच्छ्रुत्वा नमिति यावत् ३

मृगायेः सूर्यमं नील यया मरु वृक्षां म मल्लान विष्टुद गमिः
 गृहीत प्रत्यक्ष मनीय वस्तु निवृत्त यय न्यज लाहिष का प्ररुल काश
 वस्तु धव प्रज ॥ तस्मान्म दश विना न वक्त युकं महि सुम्व वहु स्यः
 नापति व तारि चै निने कु फा सन कोठ क वदि मध्या ॥ नां प्रा दू खी न द्रु नि
 व धन नी दू ल य ल म्व न पू नानि ष ॥ १ ॥ रू ना त्म ॥ १ ॥ रु द्रिय मा दान या
 ॥ १ ॥ प्र सा धन स निदि न पि ना र्य ॥ १ ॥ धू पा ष ॥ १ ॥ ला जि न मा डू व क ॥ १ ॥ न म न
 ॥ १ ॥ कू सु म न दी यी प र्या क्रिय न् का वि दू दा न व न्ध दू र्वा व ना पा धु म धू कः

१०

२२

दा मा ॥ प्र युकु शु क्रा गु नू व कू न न्या ॥ १ ॥ ग म वा व ना प र विरु कं म न्म मा सा
 व क वा का क्रि न स क ना या सि मु न स ॥ १ ॥ का र्कि म नी ल र स्त्रे ॥ १ ॥ ल म दि न र
 प विरु य प र्म स म च ल र्म ॥ १ ॥ नि न थ वि न्वा ॥ १ ॥ न दा न न ग्री व ल के ॥ १ ॥ प्र सि
 के ॥ १ ॥ वि दू द सा द श क थ प्र स ॥ १ ॥ क र्म र्थि ता ला धू क षा य नू क ॥ १ ॥ ग म वा
 व ना रु द नि ता न्म ॥ १ ॥ त स्मा ॥ १ ॥ क पा ल प र रा ग ला हा द व न्ध व दू
 षि य व प्र ला ह ॥ १ ॥ ल खा विरु क थ विरु क ग म ॥ १ ॥ कि वि न्म धू क्रि सु वि
 सृ स ना ग ॥ १ ॥ का म य रि र्था सु वि ने व पू ष दा स न ला व ध र ला ध नो

ला व ध रा स २

२२

ज नाना व ३

४॥ पत्युः ४ नित्रयन्तु कलामननस्य ॥ १॥ नित्रयान् पत्रिहास्य पूर्व ॥ साः
 नञ्जयित्वा वन ॥ २॥ कृता ॥ ३॥ माल्यनानिर्वचनं रुघाना ॥ ४॥ नस्या ॥ ५॥ सुः
 का नात्यलपयका ॥ ६॥ युसादिकारिर्नयननित्री ॥ ७॥ नचरूपा ॥ ८॥ कान्ति
 वि ॥ ९॥ षव्या काला ॥ १०॥ नमस्तु मित्पा ॥ ११॥ सासु वरि ॥ १२॥ कसु मे लन
 व ॥ १३॥ निहित्रयहित्रिविद्यामा ॥ १४॥ सविदिह ॥ १५॥ गोत्रिवलीयमाने ॥ १६॥ नाथाय
 माना ॥ १७॥ वधका ॥ १८॥ आत्मानमा ॥ १९॥ लाक ॥ २०॥ वधमान ॥ २१॥ मादर्वविश्वस्मि
 नायना ॥ २२॥ द्वापयानत्विनावरुव ॥ २३॥ धियालाकरुलाहिर्व ॥ २४॥

गावहि ४३ नजंगकहि ४३

निहृ ४ वक्रवाकादिहि ४३

स्याध ४ वध

५१

निहृ ४ वक्रवाकादिहि ४३

॥ अथ ॥ लिखा ॥ १॥ विनालमा ॥ २॥ मंगला ॥ ३॥ मादायनम ॥ ४॥ गिलाध ॥ ५॥ कर्णव
 सुका ॥ ६॥ मलदन्तपर्व ॥ ७॥ माता ॥ ८॥ दीयमुख ॥ ९॥ मूतनामा ॥ १०॥ उमा ॥ ११॥ सुना ॥ १२॥ रुदमनूय
 वधा ॥ १३॥ मता ॥ १४॥ थय ॥ १५॥ यथम ॥ १६॥ वरुवा ॥ १७॥ नम ॥ १८॥ वमना ॥ १९॥ दहि ॥ २०॥ रु ॥ २१॥ कथकि ॥ २२॥ दिवा
 रुदी ॥ २३॥ कानिल ॥ २४॥ कात्र ॥ २५॥ ववन्ध ॥ २६॥ सा ॥ २७॥ कूल ॥ २८॥ दधि ॥ २९॥ नस्या ॥ ३०॥ स्नाना ॥ ३१॥ नत्र ॥ ३२॥ कः
 लि ॥ ३३॥ नानि ॥ ३४॥ व ॥ ३५॥ धर्मा ॥ ३६॥ गुली ॥ ३७॥ हि ॥ ३८॥ पुति ॥ ३९॥ सार्य ॥ ४०॥ मा ॥ ४१॥ सु ॥ ४२॥ मय ॥ ४३॥ को ॥ ४४॥ रु ॥ ४५॥ रु ॥ ४६॥ रु ॥ ४७॥ रु ॥ ४८॥ रु ॥ ४९॥ रु ॥ ५०॥ रु ॥ ५१॥ रु ॥ ५२॥ रु ॥ ५३॥ रु ॥ ५४॥ रु ॥ ५५॥ रु ॥ ५६॥ रु ॥ ५७॥ रु ॥ ५८॥ रु ॥ ५९॥ रु ॥ ६०॥ रु ॥ ६१॥ रु ॥ ६२॥ रु ॥ ६३॥ रु ॥ ६४॥ रु ॥ ६५॥ रु ॥ ६६॥ रु ॥ ६७॥ रु ॥ ६८॥ रु ॥ ६९॥ रु ॥ ७०॥ रु ॥ ७१॥ रु ॥ ७२॥ रु ॥ ७३॥ रु ॥ ७४॥ रु ॥ ७५॥ रु ॥ ७६॥ रु ॥ ७७॥ रु ॥ ७८॥ रु ॥ ७९॥ रु ॥ ८०॥ रु ॥ ८१॥ रु ॥ ८२॥ रु ॥ ८३॥ रु ॥ ८४॥ रु ॥ ८५॥ रु ॥ ८६॥ रु ॥ ८७॥ रु ॥ ८८॥ रु ॥ ८९॥ रु ॥ ९०॥ रु ॥ ९१॥ रु ॥ ९२॥ रु ॥ ९३॥ रु ॥ ९४॥ रु ॥ ९५॥ रु ॥ ९६॥ रु ॥ ९७॥ रु ॥ ९८॥ रु ॥ ९९॥ रु ॥ १००॥ रु ॥

वरुवकु

जोत्री

लदवतायः कूलप्रदिष्टं प्रलमयं माता। अकात्रयकात्रयिनयद
 का, कमलपद्यदुर्लभं सुतीना। अखलिनप्रमलरुखपसू, त्रिषुयन
 ताहि नृमात्रनया॥ नयाकुनस्यार्द्धनवीनलाहा, दधस्तुतावन्धूनाः
 निधापि॥ नृकाविरुणात्रनरूपमंडि, रुखाकुलीकृत्यमलघयित्वा।
 सखः सखायां सुकदाहिताया, नृमेववाकागमनयनीया॥ नावरुव
 स्यापि कवचनिलं, नसुर्वयातियरुलनूतूपी। प्रसाधनं माहुरिनाद
 ताहि, नृस्ययुवकास्मन्नसकस्या॥ नमोत्रवात्मकलमलुनधीः सा

५२

२५

पसू, लंकवलमोद्वनला, सुप्रववगः पत्रि, लतुविशं, रुवाकनन
 स्यविहाः प्रपद्य॥ वरुवरुसैवसिनामनागः, कपालमंयामल, लघ
 नधीः। उपात्तरु, गषुगोलावना, का, गजाजिनस्यैवदूकूलरावः॥
 लंखान्नत्रातिविलावनय, दन्तनिविष्टनलपिदुगात्री, सान्निध्यं
 कुरुविनालमया, रुदवजातं निलकक्रियायाः॥ यथायुदलं तुजग
 ध्वनालं, नृमेववातामारुवनाकवली, लवीनमार्गं विकर्ति, प्रपद्य, नार्थे
 वनसूः रुतवत्तल, लराः॥ दिवापिनिष्टुनमवीविहासा, वाल्यादनावि

कतिर

कृत्वा लाङ्कनना। वन्द्यनिर्णयति वेदमोलं। श्रुतामनः किं ग्रहं ह
 नस्या॥ ॐ ह्येते कथं वः पुरावा पतिद्वनपथविधिविधाता। आत्मा
 नमासन्नमः। पत्नी तस्वः। अनिषकप्रतिमं ददर्श॥ सः। पतिं नदिदु
 जावत्तम्। शार्दूलवर्मान्निता नृपयः। तह किं सकिं पृह्यमा। मा
 नृपकेलासमिव पुनस्तु॥ तस्मात्तदायवमनूवुजन्त्यः। स्ववाहनका
 रुवलावतं सा। मूर्खेः। धूलकुलत्रिभिः। गोत्रेः। यथा कर्तव्यकः
 त्रिधा नृपिन्। तासां यथा कृतकपुराणं। कालीकपालाहृतं। व

१३

हा। वलाकिना नीलपयादनाजी। दूत्रपत्रिकिफनठिल्लनं वा॥ तता
 गा। लेः। धूलरुतः। पुनागे। नृदाविताममलरुयथापः। सुमनूवुजन्त्यः
 वगहमानः। शार्दूलवर्मान्निता नृपयः। तह किं सकिं पृह्यमा। मा
 नृपकेलासमिव पुनस्तु॥ तस्मात्तदायवमनूवुजन्त्यः। स्ववाहनका
 रुवलावतं सा। मूर्खेः। धूलकुलत्रिभिः। गोत्रेः। यथा कर्तव्यकः
 त्रिधा नृपिन्। तासां यथा कृतकपुराणं। कालीकपालाहृतं। व

रुविह नया ३

महिमानमस्य, सम्बर्द्धयन्तो हविषव वदन्ति॥ एके वमूर्तिर्विदितविधा
सा, सामान्यमर्षाप्रथमा वर्त्तते॥ विष्णुः ४ रुद्रस्तस्य रुद्रिः ४ कदाचि, धधाः ४
स्तुत्यास्तु वपि धातुना यो॥ नला कपालाः ४ पूनद्रुगमूल्याः ४ श्रीलक्ष्म
स्तु विनीतवत् ४ दक्षिणदानकृतनन्दिस्तु, सुदर्शिताः ४ याज्ञल
यः ४ यः १८ मू॥ कर्मनमूर्द्धः ४ नतयगुयानि, वावाहवि वृक्षरुतंसि नन
। आलोकमाणसूना ४ १४ वा, स्तुता वयासास्यथप्रधनी॥ नञया ४
४ सप्तजपूनास्तु, पर्विहस्तिकुगपूर्वमाह, विवाहयस्तु विनगुयुय

四

५४

वाहन ३

मध्यावः पूर्ववृत्तामयति॥ विश्ववसेषाग्रहत्रेः प्रवीलेः संगीयमान
त्रिपुत्रावदानशश्रुधनममकविकारलघुः ततात्रतात्राधिपखलुधः
त्री॥ खखत्रगामीतममरुवाहः सगदवामीकत्रकिंकिणीकशतटाः
रिघातादिवलग्नपक्षधुत्वन्मरुः प्रातयनविषालः॥ सप्रापदप्राफ
पनाहियाग्ननगद्यगुर्फनगर्जमरुर्हन्ता॥ यत्राविलग्नैरुत्रदृष्टिपातेः
सुवर्णसूत्रेविवक्ष्यमाना॥ तस्यापकलघननीलकलः॥ करुहलाद
न्मखयोत्रदृष्टः॥ स्ववाहविक्रादवतीर्यमार्गदासन्नरुष्टमिया

यदव॥ न मृदि मद्युज नाधिरूटे. वृत्ते र्जना नागि विवकुवली. यत्
 रूग्म मागमन पुनी कः. पुरु लवृक्षे कठ के विवस्वे ॥ वर्ग वृहो यवमः
 ही धना ना. छात्र पूत्रणा घटि तापि क्ष ना. समीय दुर्दूत्र विस्वार्थि धा योः
 रिन्ने कस ह्यय सा मि वा धो. की मा न रू रू मि ध ना रु न ह. ये ला य व न्या
 न क न पु ल म ॥ पूर्व महि मा सहि त स्य दू न. मा व र्जि त ना स गि ना वि व द
 ॥ स्या ति या ग म दि क स त्म ख धी. रू मा रु त्रा ग स न ना मू प ह्या. या व ल य त
 दि त्म म ध म न. मा गु ल्फ की र्क्ष म त्पू ष मा र्ज म् ॥ त सि त्म दू र्ध पू न स न्द

५५

श्री ल. मी ल न स न्द र्शन लाल सानी. पा सा द मा ला स व रू वृ नि स्तृ ए काः
 न्य का र्या नि वि व शि ता नि ॥ आ ला क मा र्ज स ह सा वृ ज न्या. क या वि दू द ष
 न वा क मा ल्य ॥ व धू न स म्हा वि त उ व ना व. त्क न ल नू र्धा पि न क ल पा ण ॥
 पुं सा धि का ल मि त म ग्रा य द. मा कि ष का वि ड व रा ग म वा उ त्पृ ष्ट ली ला ग
 ति वा ग वा क्क. द ल क कां कां प द वी न ता ना ॥ वि ला च न द कि ण म ऊ न न
 स म्हा य त द शि त वा म न ग्रा. त ये व वा ना य न स नि क र्ष. य यो स ला का मः
 प नो व रु ती ॥ जाला क न प्र धि त द शि न्या. प्र ह्ना न रि न्ना न व व न्ध नी वी

नाहि विविशरु न त पुरुष, हस्त न गच्छ व वल म्वा स ॥ अर्द्ध विना स
 त्व न मूर्ति ताया ॥ पद पद दू र्निमिता म ल की ॥ क स्था वि दा सी दु न ना न
 दा नी, म म्मु ष म्मु ला र्थि न म्मु ष ॥ १५ ॥ ता सा म्मुखे वा स व ग न्ध ग र्हे र्था फा
 क्ता ॥ १६ ॥ सान्द्र क रू रु ला ना ॥ वि ला ल न ग्नु म्ने र्ग वा दा ॥ स रु म्प य द्राः
 रु व ल ॥ १७ ॥ वा स न्ता ॥ ना व ल ना का कू ल मि न्द्र मो लि, नू ला न र्ण ना ज प र्थः
 पु थ द ॥ १८ ॥ या सा द ॥ १९ ॥ ति दि वा पि कू र्व न्, अ स्ता हि ष क दि गु ल कू वी ति ॥
 त म् क द ॥ २० ॥ न य ने ॥ २१ ॥ पि व न्ता, ना र्थ न ज म्मु र्षि ष या क्ता ति ॥ २२ ॥

३१३

विनोय कोतेनंखिली वभुवः स्य २

॥ १ ॥ धि य व र्हि मा सा सि र्वा म ना व अ वि वे प्र वि ष्ण ॥ कू न त ना द ॥ २ ॥ व भ न
 द र्थ, म प र्ण या य ल व या हि त पी या दा ॥ ३ ॥ म य स्य ल रु त ना म्, सा स्या र्क नाः
 र्था कि म्ना क ॥ ४ ॥ ॥ य व स्य व ल स्य ह ला या ॥ ५ ॥ न व दि दं द न्द्र म या ऊ यिः
 य ना ॥ ६ ॥ त सि न्द्र य नू प वि ध न य ल ॥ ७ ॥ प स्य ॥ ८ ॥ प्र ना ना वि रु ला र्क वि ष ना ॥ ९ ॥ न नू
 न मो नू र नू र्ष णी त्री न, म न न द र्थ कू र्मा य ध स्या ॥ १० ॥ व सा द व म्मु दी य
 म न्य, स न्य रु द रु ॥ ११ ॥ स य म व का म ॥ १२ ॥ अ न न स म्ब ल म वा य र्हि ना, म ना
 न थ यार्थि न म्मु व न ला म्मु र्क न मा कू म्म म ही ध ना ला, म्मु र्क ना न अ ति

दि २

लो ल ना ज ॥ ॐ लो^३ष धी प्र सु वि ला सि ना नां^२ ॥ ॐ^३ ॥ ॐ^३ सु खा सिः
 ॥ ॐ^३ ॥ क पु न चूर्ण क न त्त ज द र्शि हि मा ल य स्या ल य मा स सा द ॥ न ग
 व नी र्था य न द रु रु रु ॥ सु न य ना दी धि नि मा नि वा ॥ ॐ^३ ॥ क्रा ना नि पूर्व क
 म ला स न न क क्रा न ना ल्प दि य न वि व ॥ न म न्व गि न्द्र य मू खा ध्य द वा ॥ ॐ^३
 ॥ स फ र्षि पूर्व ॥ प न म र्ष य ॥ ग ल ध्य गि र्था ल य म र्ष ग व न य ॥ ॐ^३
 स मा त्र रु मि वा रु मा र्थ ॥ न ग ॥ ॐ^३ ॥ वि ष्व र ह ग म्म व ल व ल मे र्थ म ध
 प र्क रु य न व दू क व न ग य नी न य ल गृ हो ल व स म ल व ॥ ॐ^३

५१

य ॥ ॐ^३

समूह २

लो ॥ ॐ^३

समूह

ल वा सा ॥ स वे धू स मी प नि न्ये वि ना ने व व ना ध मू खे ॥ व ला स मी प स
 ठ रु त ना जि न वे दू द ला नि व व न्द्र पा दे ॥ न या प्र वृ ज्ञा न न व न्द्र का न्था
 प्र रु ल व ॥ ॐ^३ ॥ क मू द ॥ क मा र्था ॥ प्र स न्न व न ॥ स लि ल ॥ नि वा रु ली रु षः
 मा न ॥ ॐ^३ ॥ व द व ला क ॥ न या स मा प रि षु का न ना ति कि चि न् य व रु पि
 न स द ना नि ॥ की र्थ ग ॥ न रु ॥ म न्व रु व न्द्र ना न्द्र ला ला नि वि ला व ना नि
 ॥ न स्या ॥ क र्वा ॥ लो ल गु च्च य नी न ॥ ज य रु ना मा रु लि म र्ष मू र्ति ॥ उ मा न ना
 गू ठ न ना ॥ स न स्य ॥ न रु कि न ॥ पूर्व मि व य ना रु ॥ नो मा रु म ॥ पा द व रु द

मायाः स्विर्नां गुलिः पूरुव कठु नासीत्। वृहिसु याः पातिसमागम
न समविरुक्तं वमनाह वस्य॥ प्रयुक्तपातिगुरु लयदन्त दधुवर्ण
मनिकानि मंग्नी। सान्निध्यया गम दूरु या सु दाना किं कथनं श्री नूरु य
स्यत स्या॥ प्रदक्षिण प्रक्रम लक्षणना नूदविषसु निधून वरा सा मया
नूपांति विवर्तमान मन्त्रान्य संसृक्त मंद ह्रिया म॥ नो दम्यतीतिः पत्रिः
लायवक्ति मन्त्रान्य संसृतिमालिना को। सकात्र यामास वधूं यं नाधः।
सिन्त मृदा विविला जमादी॥ सा लाज धूमा ऊलिमिष्ट गंध गुनूपदक्ष

५८

२

द्वंद्वनीतिनाय। कपाल संसृष्टिगिषः सत स्या मूदूर्ह काले लता प्रपद
॥ तदीयदा श्री गुनूपरु लय मूदूर्ह सिकाला ज्ञाना गमं क्रा ॥ वधूं मूर्खका
नय वावर्तं स मावा न धूमग्रह लक्ष्म वरुवा॥ वधूं दिजः प्राह न वैष वलै
वक्ति विवर्तं प्रति पूर्वसा को। गिवन रुकु सुरु कर्म चर्या कार्या लया म
कविवाचयति॥ आलाचना नं गु वल विवर्त पीतं गुना सु दवर्त रु वा
न्या॥ निदाद्य काले लक्ष्म रुदय व माह नु मरु ॥ प्रथमं पृथिव्या॥ प्रवर्त रु
द्रा प्रव दर्शन नाय प्रयुक्त मा लपिय दर्शन ना सा तुष्ट मिष्टान न न मूर्त म

यः श्रीसन्नकल्लिकथमयुवावा॥ ॐ क्वविधिः नूपादिनन प्रयुक्तं
 तियह। अथवा नो। प्र। अमरु कोपित नो प्रज्ञानी पद्मासनस्य यपिताम
 हाया॥ वधूर्विभग्नपुतिनन्यनसं कल्यातिवीनप्रसवारुवति। वाचस्य
 निःसन्नपि सांख्यमूर्तु वाशास्य विनालिमिता वरुवा॥ कृपापंचात्रीवदु
 नमुवदी मूयस्य पञ्चकनकासनहो। ज्ञायापनी लोकि कर्मविनयमा
 डाकनात्रापमनवरुनी॥ पञ्चकल्लोर्लुविन्दुवृन्दे नादृष्टमूकाह
 लजालल्लहं। तथा नूपय्यायतनालदधु माधरुल्लक्ष्मीः कमलानयणी॥

५२

विधाप्रयुक्तनहुवाप्रयन सत्रसुगीननिधूननूनावा संकात्रपूतः
 नववैवजल्यं वधूर्मुखयायतिवन्धनना॥ नोसन्धिषूयजितवृहिरुः
 दं नसाकनप्रपुतिरिन्नवागी। अपथनामसुवर्णी मूर्तुहं प्रयागमा
 यललिताहं हारी॥ दवाहं दन्तहं मूर्तुहार्य किमीदं दल्लक्ष्मणः
 प्रलम्भा। अथावसानपुतिलक्ष्मणं ययाविनयके सत्रस्य सवी। अवा
 यनूपहं नदृष्टिपूर्तं दवेनल्लक्ष्मीः कृतपातिसंरुः। दयाः संका। अ
 तियस्य नूतं गार्हपत्यं च मुखमूतनाम॥ तस्यानूमनरुगवाविमः

५३

स्वातिषू२
न्यूं या पात्रमां न न्यपि सायकानां। कालप्रयुक्तखलुकालविहिर्विज्ञाप
नारुहृषसिद्धिमति॥ उहिष्ठवंसतिरुनवाकस्त्यकाहयनस्यपूनः
प्रगच्छाहयान्ननःपधतिमाधवधर्। पीलूनूर्खचूतनवनवसनी॥ पूर्व
यथादवयननियोगं मूर्द्धावहन्कार्मकवाहहृष्टः। शपत्तमेवाहुग
रुद्रगमीददीयमानानवयोवनन॥ अथविबूधगणस्तानिन्दूभोति
विहृष्टः। किन्तिधनयतिकन्यामाददानःकनकाकनकलोकक
रुकि। अरुसनाथः। किन्तिविबूधगणस्तानिन्दूभोति
कोरुकागत्रमागन्त॥ नवय

[illegible]

श्रीरत्नाग्रह नमः ॥ योगानन्दकरियसः सुखकरियसः ॥
माहेश्वरी तु क्लृप्तारितिल वमान युगति मातृ च नमो श्वरी ॥

किंत्वा ४

कुमारसम्भव

महाकाव्य ।

१३४

३१

६९

११